धन्यवाद

श्रीमान्

लाला भगवतप्रसाद जी काग़ज़ी चावड़ी बाज़ार देहली को यह श्री दिगंबर जैन उपदेशक सौसाइटी अनेक धन्यवाद देती है, जिन्होंने अपने पवित्र "प्रेम" तथा "धन" से इस पुस्तक के छापने में हमें सहायता दी है।

श्री दिगंबर जैन उपदेशक
सौसाइटी देहली

नोट

इन पुस्तकों की बिक्री से लाला भगवतप्रसाद जी का रुपया अदा करने के पश्चात् जो कुछ लाभ होगा वह श्री दिगंबर जैन उपदेशक सौसाइटी को मिलेगा, इस लिये जैन सज्जनों से प्रार्थना है कि इस पुस्तक के प्रचार में यथाशक्ति प्रयत्न करें।

भगवत प्रसाद कागज़ी

अर्हन्
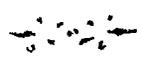
अंक १ दृश्य १

सूत्रधार का मकान

प्राथमिक प्रस्तावना

सूत्रधार, नटी और शिष्यादि का स्तुति करना

गाना नं० १

(तर्ज़—प्रथम ओ३म् करो उचार)

आदिनाथ नमस्कार—
आपको अनूप रूप शुद्ध बुद्ध निर्विकार। आदिनाथ०
रङ्गभूमि सकल जगत, जीव सारे नृत्यकार,
एक अनेक रूपधार नाचत फिरत बारबार। आदि०
ज्ञानवान जानलेत सत्त चित्त निर्विकार, आवत
नाचत सुध विसार; कर्म पिंड सूत्रधार। आदि०
जनम जनम मरन मरन भोगत विपत हो
लचार 'माइल' दास की पुकार सुनके सगरे
दोष टार; आदिनाथ नमस्कार।

दोहा

सूत्रधार— पार ब्रह्म परमात्मा परम ज्योति निर्मेश
स्वयं-जात जगद्गुरु वीतराग विदेश

(नटीसे)—प्यारी! तुमने आज सभामंडप की शोभा देखी? कैसे कैसे सज्जनों ने कृपा की है, अपने अनुग्रह और महरबानी से इस उपदेशक सोसाइटी को इज़्ज़त दी है—

चौपाई

सज्जन ज्ञानी और सुघर नर।
सभा जुरी बहु शुभ मनोहर।
बार बार हिये आवत चाओ।
भाव कोई सुन्दर दरसाओ॥

क्यों प्यारी! सच है ना? आज के जलसे की अपूर्व शोभा और रौनक़ देखकर मेरा तो बे अख़्तियार जी चाहता है कि इन सज्जनों का चित्त हर्षाइये, कोई सुन्दर नाटक दिखलाइये।

नटी—सच है स्वामी सच है—

शेर

रंगे महफ़िल देखकर हृदय में उठती है तरंग
आज जो नाटक दिखाएं हो निराला रंग ढंग

सूत्र०—हां ढंग भी निराला हो और खेल भी आला हो। तुम जानती हो कि नाटकशाला और पाठशाला इन दोनों में समान सम्बन्ध है बल्कि सच पूछो तो दोनों ही शिक्षा प्रबन्ध हैं। भेद केवल इतना है कि पुस्तक में जो पाठ है वह अमूर्तिक ज्ञान है और नाटक का उपदेश नेत्रों का विषय होने से मूर्तिमान है।

नटी— यानी ?

सूत्र०—लाखों वर्षकी गुज़री हुई कहानी, बुद्धिमान पंडित तो शास्त्रों की बानी से ज़बानी कहकर समझाते हैं और हम लोग नाटक के पर्दों में साक्षात् करके दिखलाते हैं

नटी—फिरतो नाटकशालाभी पाठशालाके हमसरहै।

सूत्र०—बल्कि उससे भी बढ़कर है; जिस तरह कड़वी से कड़वी दवा एक खांडके बताशे में रखकर बग़ैर मुंह कड़वा कियें खायी जा सकती है, इसी तरह खेल और तमाशेके रूपमें बड़ीसे बड़ी और मुश्किल से मुश्किल बात भी आसानी से समझाई जा-सकती है; दूसरे, तमाशा देखनेका सबको चाव है; इसलिये शिक्षाका यह सबसे सरल उपाय है।

नटी—महाराज मैं जान गई, मतलब पहचान गई; परन्तु यह तो फ़रमाइयेगा कि आज कौनसा नाटक दिखलाइयेगा ? पुरुषों को समझाना खूब है या स्त्री-समाज को ज्ञान देना मतलब है ?

सूत्र०—हां खूब याद दिलाया, अच्छा ध्यान आया। यों तो भारत की स्त्रियों का पतिव्रत धर्म जग-द्विख्यात है, सबकी जानी हुई बात है, लेकिन आज कल आज़ादी का तौर है जिसके प्रभाव से स्त्री और पुरुषों की व्यवस्था भी कुछ और की और है;—

दोहा

श्रीपाल मैना सती जो हैं जग विख्यात
प्रियनाट्य दिखलाइये वही आज की रात

अंक १ — दृश्य २
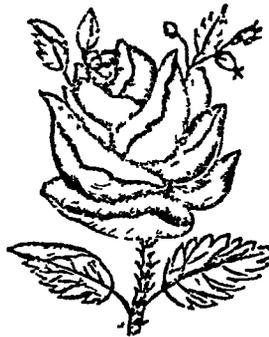
दर्बार

राजकुमारी मैनासुन्दरीके अलावा प्रधान
और अन्य दरबारियों का यथा स्थान
बैठे और खड़े दिखाई देना, गुरु महात्मा
का अपने हाथ से सुरसुन्दरी का हाथ
पकड़कर राजा पहुपाल के सामने पेश
करना ।

राजा— (गुरुमहाराज से) गुरु महाराज! जिस तरह जगत में चांद और सितारे एक सूरज ही के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं इसी तरह महात्माओं के ज्ञान रूपी [illegible] वक्या हरिवाहन वरवीर नः स्थियों के हन्द [illegible] ऐसा ही होगा ।

अविद्या—महाराजाधिराज के पुण्य और प्रताप की राजकुमारी मैनासुन्दरी सभामें पधार रही हैं ।

सहेलियों का गाना, राजकुमारी
मैनासुन्दरी का आना ।

गाना नं० २

आज हमारी राज दुलारी मैना प्यारी आती है
प्राण पियारी आनंदकारी बाद बहारी आती है
राजा की प्यारी राजकुमारी प्राण पियारी आती है
छव है न्यारी जोबन वारी वह मनवारी आती है

राजा—कहो पुत्री तुमने क्या क्या पढ़ा है ?

सुरसुन्दरी—पिताजी ! आपके अनुग्रह और गुरु महाराज की कृपा से तर्क, छन्द, अलङ्कार, व्याकरण, गणित और धर्म-शास्त्र थोड़ा थोड़ा सब ही कुछ देखा है।

राजा—अच्छा बताओ इस संसार में स्त्री जाति को किन किन बातों से सुख प्राप्त होता है?

दोहा

स्त्री [illegible]—विद्या, जोवन, रूप, धन, और पतीका नेह
और [illegible] धारा भूम [illegible] सुख साधन हैं येह
विद्या पाई फिरकर [illegible] के पकाने के
तन मन वारें धनको निसारें, [illegible] दोनोंका
गुन उचारें उसका छिन छि[illegible]त तरह

मैनासुन्दरी का आकर अपनी बहि[illegible] सुरसुन्दरी के पास खड़ा होना।

मैना०—पिताजी ! आपके महा आनन्द कारी चरणारविन्द को बारम्बार प्रणाम हो।

राजा—जिस तरह शुक्ल पक्षमें चांद को देखकर समुद्र के अथाह जल में एक जोश पैदा होता है और वह अपने दिली जोश को दबा न सकने की

वजहसे वल्लियों उछलता है, उसी तरह आज मेरे दिलमें भी अपने कुलरूपी आकाश के इन दोनों चमकते हुए सितारों को देखकर हृदयरूपी समुद्र में प्रेम का जल अपनी स्वाभाविक तरङ्गों से रह रहकर उमड़ता है।

दोनों लड़कियां—पूज्य पिताजी !

राजा—बेटी मैनासुन्दरी ! तुमने अपनी माताजीकी आज्ञासे दिगम्बर गुरु और जैन अर्जिकाओंके सन्मुख विद्याध्ययन किया है; क्या मेरे प्रश्नों का उत्तर दे सकती हो ?

मैना—क्यों नहीं पिताजी।

राजा—अच्छा तो सामने आओ और बताओ दुनियामें मुशकिल से प्राप्त होनेवाली और सबमें जियादा बहुमूल्य वस्तु कौनसी है ?

मैना—पिताजी मुशकिल से हासिल होनेवाला एक यथार्थ ज्ञान है और सबसे ज़ियादा क़ीमती और क़द्रके क़ाबिल धर्म है ; जिस धर्म के लिये महासती सीताजी ने अग्नि में प्रवेश किया. महाराज रामचन्द्रजी ने घर और राज्य को त्याग

कर बनवास लिया ; वह धर्म चक्रवर्ती का राज नारायण और प्रतिनारायण का तख्तोताज तो एक तरफ़, दुनिया में सबसे प्यारी चीज़ जो मनुष्य को अपना जीवन है अगर उसके बदले में भी ख़रीदा जा सकता है तो निस्सन्देह बहुत सस्ता और आसान हाथ आता है:—

शेर

उद्वेग मिटकर शान्त हो जिससे कि मन वह धर्म है
आग भी जिससे बने फूलोंका बन वह धर्म है
हो मुरादों का हरा जिस से चमन वह धर्म है
कहते हैं निज आत्माका जिसको धन वहधर्म है
मग्न है सागर में दुखके आत्मा जो कर्म से
लोक और परलोक में पाता है सुख वह धर्म से

राजा— शाबाश पुत्री शाबाश ! जैसा प्रश्न किया था, उसका जवाब भी वैसा ही मनोहर मिला, अच्छा अब यह बताओ कि जिस तरह तुम्हारी बहन सुरसुन्दरी ने अपने विवाह के लिये कोशम्भीपुर के राजकुमार को पसंद किया है क्या उसी तरह तुमने भी किसी

होनहार और श्रेष्ठ राजकुमार को अपना दिल दिया है ? अगर ऐसा ही है तो बताओ, पत्र या दूत भेजकर उसे बुलाया जाय और शुभ मुहूर्त में उसके साथ तुम्हारा ब्याह रचाया जाय।

मैना०— हैं ! यह मैं क्या सुन रही हूं ! महाराज महाराज ! यह वचन आपके मुंह से निकला है या मेरे कानों को किसी समझ में न आने वाले कारण से धोका हुआ है ?

शेर

ज़मीं फटजाय वह बे शर्म दुख्तर उसमें गड़जाये,
घरौंदा ज़िन्दगी का बात करने में बिगड़ जाये।
गिरे बिजली फ़लकसे और जलाकर ख़ाकक्कर डाले,
क़ज़ा उस बे हया हस्तीका क़िस्सा पाककर डाले।
जो अपने बाप से अपने लिये ख़ुद आप वर मांगे,
मिलाये ख़ाक में अस्मत को वह दाग़े जिगर मांगे।

राजा—नहीं, धोका नहीं, बल्कि मैंने कहा है. यही बात है यही खयाल है, तूने बिलकुल ठीक सुना है, क्या तेरे नज़दीक यह बे शरमी की बात है ? तअज्जुब है जिस बात को बड़ी बहन ने खुशी

से क़बूल किया उसी बातने छोटी वहन के दिल को इतना मलूल किया !

मैना—बेशक अगर बड़ी वहन ने खुद अपने लिये वर मांगाहै तो यह उसका नहीं, बल्के उसके गुरु और गुरुकी शिक्षा का क़सूर है, वर्नः पिताका ऐसा सवाल और एक लाजवती पुत्री का ऐसा जवाव ! शील और समझदारी से दूर है ।

शेर

ख़िलाफ़े धर्म मेरा तो वतीरा हो नहीं सकता,
किसीको हो, मगर मुझको गवारा हो नहीं सकता ;
बुरी शिक्षाका फल हरगिज़ भी अच्छा हो नहीं सकता,
मैं हूं जिन-मतकी ज्ञाता मुझसे ऐसा हो नहीं सकता ।
जिसे तुम चाहो दे दो बीनती है मेरी चरणों में
मुझे मिल जायगा वोही जो लिक्खा मेरे कर्मों में

राजा—क्या कहा ? जो कुछ कर्मों में लिखा है वही मिल जायगा ? तो क्या तेरे नज़दीक सब कुछ कर्मों ही के हाथ है ?

मैना०—हां, बेशक यही बात है ।

राजा—और अबतक जो सुख तुझे हमारे घर में मिला है ?

मैना०—पिताजी ! आपको भी मेरा प्रेम मेरे कर्मों ही ने दिया है।

राजा—मैं फिर कहता हूं कि तू होशमें आ, विना ही कारण मुझे क्रोध न दिला। जिस तरह सुरसुन्दरी ने खुद अपना वर तजवीज़ कर लिया है उसी तरह तू भी पसन्द करले, नहीं तो पछतायगी।

मैना—और मैं भी फिर कहती हूं कि जिस तरह कछ और सुकछने अपनी पुत्री नन्दा और सुनन्दा को अपनी मरज़ी से भगवान ऋषभ देव के साथ व्याह दिया था उसी तरह आप भी अपनी मरज़ी से चाहे जिस के साथ व्याह दीजिये, मेरी ज़बान पर तो ये निर्लज्ज बात आई है न आएगी।

राजा—कितनी बेवकूफ़ लड़की है, शीलवती और धर्मात्मा होने का तो अभिमान करती है और मैं तेरा पिता हूं, तू पिता की आज्ञा का अपमान

करती है, यही जिन-मत की शिक्षा है ? क्या इसी चरित्र्य पर कुलाचार्य होने का दावा है ?

शेर

यही सत्संग का फल है, ज़िदें करनी जो आई हैं ?
यही गुस्ताख़ियां जिनमतकी शिक्षाने सिखाई हैं ?
इन्हीं तर्रारियों पर नाज़ है कुलवान होने का ?
यह कुलकी लाज रखनेका तरीक़ा है या खोनेका ?

मैंना०—पिताजी ! आप बृथा क्रोध न कीजिये अब तक जो मैंने बात कही है वह निश्चयसे कुलवान और शीलवती कन्याओं की रीति यही है परंतु आज मेरे अशुभ कर्मके उदय से कुछ आपका ऐसा ही ध्यान हुआ है जो योग्य व्यवस्थाके प्रकट करने पर उलटा आज्ञा भंग करने का दोष लगता है वर्नः मैं और पिताकी आज्ञा भंग करने का अपराध अर्हन्त ! अर्हन्त ! !

शेर

हुक्म हो तो जान दे दूं आपके इर्शाद पर,
जिसमें यह जज़बा न हो लानत है उस औलाद पर;
किस तरह औलाद लेकिन हुक्म ऐसा मान जाय,

धर्म जाये, शील जाये, जिसमें कुलकी आन जाये।

राजा—चुप चुप ओ ज़बांदराज़ लड़की चुप रह, अगर मेरे प्रश्नों का उत्तर देना नहीं चाहती तो कुछ और भी न कह ; मैं तुझे हुक्म देता हूं कि अपनी ज़बान बन्द रख और ख़मोश रह, वर्नः मैं खुद तेरे लिये कोई वर पसन्द करके व्याह दूंगा इसमें तुझे रंज हो या राहत हो लेकिन फिर मुझ से कुछ न शिकायत हो।

मैना०—हरगिज़ नहीं

दुखकी करनी करके आया सुख कहांसे पाये,
बोये पेड़ बबूल के तो आम कहां से खाये ;
कर्मों ही में सुख नहीं तो सुख कहां से आये,
जो कर्मन की रेख है वह कैसे मिट जाये।

राजा—फिर वही कर्मों का झमेला निकाला, दूर अय नादान लड़की ज़िद छोड़ दे वगरना मेरे गुस्से की आग ज़ियादा भड़क जायगी तो समझ लेना अपने को बजाय इन सुन्दर महलों के किसी झोंपड़े में पायगी।

मैना०—झोंपड़ी हो या महल सब चार दिनकी बात है,
आये भी ख़ाली हाथसे जाना भी ख़ाली हाथ है;
मालो ज़र रहता सदा है क्या बशरके साथमें,
कर्म ही आते हैं आगे हर जगह हर बातमें;
कर्मही से राज भी पाया है तुमने अय पिता,
वर्नः जां है एकसी यह सब किसीके गातमें।

राजा—अच्छा अब देखूंगा तेरे कर्मों को क्या सलूक करेंगे तेरे साथ में, जब दे दूंगा तेरा हाथ किसी दरिद्री के हाथमें।

राजाका क्रोधमें चला जाना, मैना सुन्दरी का अदब से गर्दन झुकाकर खड़ा रहना, मंत्री और दरबारियोंका अफ़सोसमें खड़े रहना।
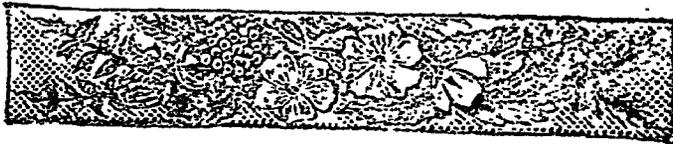
अंक १ दृश्य ३

जंगल

श्रीपालका जंगलमें अपने कर्मों पर आफ़सोस करना

गाना नं० ४

श्रीपाल—देखें क्या क्या करम दिखलाये जायेंगे,
जैसी करेंगे वैसी भरेंगे, अपने मनको युहीं
समझाये जायेंगे। देखें क्या क्या
बापको सर से मेरे तूने हटाया ज़ालिम,
अंग में कुष्ट मेरे रोग लगाया ज़ालिम
राज और पाट भी सब तूने छुड़ाया ज़ालिम
मेरी माताको अलग मुझसे कराया ज़ालिम
और जितना तेरा जी चाहे सताले ज़ालिम
हमभी समताले, तेरे ये, सदमे, उठायें जायेंगे
देखें क्या क्या करम०

अय मेरे ख़ैर ख़्वाह व जांनिसारो ! तुमने भी मेरे साथ बहुत दुख उठाया है. बहतर है कि यहीं कुछ देर के वास्ते डेरे डालदो।

राजा पहुपालका इत्तफ़ाक़से
इसी जंगलमें आना श्रीपाल
से हाल दर्याफ्त करना।

राजा—हैं यह कौन ! क्यों अय परदेसी तू कौन है? और कहांसे आया है ? यंह लशकर अपने साथ कैसा लाया है ?—

शेर

तन में है रोग कुष्ट का कैसा लगा हुआ ?
इस देस में है किस लिये आना तेरा हुआ ?

श्रीपाल— राजन् !

दोहा

भ्रमंत फिरें बनबास में दुखिया मैले भेस।
बिपता के दिन काटने आये तुम्हरे देस॥

राजा—अय परदेसी फिक्र इस कद्र अपने दिल में न कर मैं दूंगा तुझे बहुत सा मालोजर।

मंत्री—श्री महाराज ? यह क्या बात है आप इस कुष्टी को क्यों मुंह लगाते हैं, इस बीमारी वाले से तो लोग कोसों दूर जाते हैं

शेर

ज़रा कुछ ग़ौर फ़रमाओ न इसके पास जाओ तुम
इसे यह रोगहै उड़ना न हरगिज़ मुंह लगाओ तुम

शरीर इसके से बू आती है कुष्ट इसको बड़ा भारी
हटो इससे, बचो इससे, न हरगिज़ पास जाओ तुम

राजा—नहीं पर्वा मुझे इसकी हो चाहे लाख बीमारी
करूंगा मैं मदद इसकी पड़ा है इस पे दुख भारी

ख़ियाल रक्खो जो लोग बुरे वक्त में किसी के काम नहीं आते वो इस दुनियामें खुदग़रज और मतलबी कहलाते हैं; यह न समझो जो लोग अपना तन; मन; धन नेक कामों में लगाते हैं वो दुख पाते हैं; नहीं बल्कि लोक और परलोक दोनों में सुख पाते हैं; देखो इसके परिग्रह से मालूम होता है कि यह ज़रूर कहीं का राजा या राजकुमार है; कुष्ट ने सताया है जो विपता के दिन काटता हुआ हमारे देस में निकल आया है, इसकी मेहमां नवाजी हमारा फर्ज है; इसलिये इससे दर्याफ्त करना चाहिये कि यह क्या चाहता है, यह जो भी चाहेगा इसे वही दिया जायगा

वज़ीर—पृथ्वीनाथ ! इस ख़ियाल पर दुबारा नज़र डालिये।

राजा जो कुछ हम कहते हैं वह ठीक है।

वज़ीर—श्रीमहाराज ! ज़रा ग़ौर............

राजा—ख़ामोश ज़बान बन्द कर [श्रीपाल से] अय परदेसी ! जो मांगता है मांग, जीचाहे जो तलब कर ।

श्रीपाल—मांगता हूं अगर आप वचन दें ।

राजा—अच्छा ले मैं तुझको वचन देता हूं, मांग क्या मांगता है ?

श्रीपाल—आपकी राजसुता के साथ अपनी शादी ।

वज़ीर—उफ़ ! बरबादी ।

राजा—बेशक मैं ने धोका खाया, इसने मुझको बहुत बड़ी दग़ा दी । [थोड़ी देर सोचकर] मगर हां मैं तो खुद ही मैनासुन्दरी के लिये ऐसे वरकी तलाश में था, खूब हुआ जो यह घर बैठे चला आया ; अब बहतर है कि मैनासुन्दरी का विवाह इसके साथ कर दूं, इसको जो मैं ने वचन दिया है वह भी पूरा हो जायगा और मैनासुन्दरी को भी उसके कर्म की ज़िद का नतीजा मिल जायगा. [श्रीपाल से] अच्छा अय परदेसी ! हमने जो

तुमसे वचन हारा है इसको पूरा करेंगे। किसी शुभ मुहूर्त्त में मैनासुन्दरी के साथ तुम्हारा विवाह करेंगे [प्रधान से] प्रधानजी ! तुम इनके साथ जाओ, इनको हमारे बागवाले महल में ठहराकर पंडित विद्यासागर जी को अपने साथ लेकर दरबार में आओ।

सबका जाना

अंक १ दृश्य ८

दर्बार

राजा पहुपाल का अपने दरबार में मय राजकुमारी सुरसुन्दरी और मैनासुन्दरी के बैठे हुए नज़र आना. दर्बार का मय पण्डित विद्यासागरजी के दरबार में हाज़िर होना।

चोबदार—श्रीमहाराज पं० विद्यासागर जी दरबार में पधारते हैं।

पं० विद्या—महाराज की जय हो।

राजा—आइये महाराज, पधारिये।

पं वि —फ़र्माइये जो हुक्म हो, मेरे लायक़ क्या है कार्य्य ?

राजा—महाराज आज बेटी मैनासुन्दरी का ब्याह करना है कोई जल्दी का मुहूर्त निकाल दीजिये ।

पं० वि —(स्वगतं) हैं ! यह क्या ? राजा की बेटी का विवाह और जल्दी का मुहूर्त (राजासे) अच्छा यह तो बताइये किस नामका कुमार है ? इसका कौनसा दयार है ?

राजा—नाम श्रीपाल है, राजा है न साहूकार है कुष्टसे लाचार है।

पं वि —[कुछ उंगलियोंपर हिसाव लगाकर] महाराज मुहूर्त तो आजका अति उत्कृष्ट है मगर यह कार्य आपका महा निकृष्ट है

राजा—क्या कहा ?

पंडित—श्री महाराज मुहूर्त तो मैंनासुन्दरी के विवाह के लिये आजके दिन ऐसा अच्छा निकलता है कि फिर बीस बर्ष तक ऐसा अच्छा मुहूर्त नहीं निकलता है मगर राजन् ! यह क्या बात ?

क्या श्रीपाल से अच्छा वर इस जहान में और नहीं पाते हो जो अपनी राजदुलारी को कुष्टी के साथ व्याहते हो। देखो अच्छा वर और अच्छा घर देख कर कन्या को देना माता पिता का धर्म है, कन्याको दुख देने से जन्म जन्म में दुख भोगना पड़ता है।

राजा—महाराज आप इस कार्य में तर्क न कीजिये लीजिये यह आप अपनी दक्षिणा लीजिये, मैंना सुन्दरी कहती है "जो कर्मों में लिखा है वही होगा,, इसलिये मैं उसका विवाह कुष्टी के साथ करूंगा और उसके कर्मों को देखूंगा॥

पंडित—गर्भ में राजन् तुम्हें इतना न आना चाहिये
धर्म का भी तो ज़रा कुछ खौफ़ खाना चाहिये
मैंनासुन्दर ने कहा जो कुछ बजा है ठीक है
उसकी बातों पर तुम्हें ईमान लाना चाहिये
कर्मसे दुख सुख मिलें सच बात है क्या झूठ है
छोड़ कर सद्धर्म को उल्टा न जाना चाहिये
दक्षिणा लेंगे न राजन् हम तुम्हारे हाथ से

ऐसे अनरथ काम का पैसा न खाना चाहिये

पण्डित का यह कहकर चले जाना और राजाका गुस्से की हालत में चोवदार को श्रीपाल की तलबी के लिये हुक्म देना।

राजा—चोवदार ! देखो तुम जाओ और श्रीपाल को जल्द दरबार में बुला लाओ।

चोवदार—जो आज्ञा महाराज।

गाना नं० ५

तर्ज़—कह रहा है आस्मां

वज़ीर—बेटा बेटीसे ख़फ़ा होते हुज़ूर इतना नहीं,
हमने माना है क़सूर इसका ज़रूर इतना नहीं;
दरगुज़र कीजे, न कीजे इसकी बातोंका ख़ियाल,
यह अभी नादान बच्चा है शऊर इतना नहीं;
मैनासुन्दर को नहीं कुष्टी से व्यहाना चाहिये,
जितनी देते हो सज़ा इसका क़सूर इतना नहीं।
हजूर ज़रा ग़ौर फ़रमाइये कि..........

राजा—बस मैं ज़ियादा कुछ नहीं सुनना चाहता जो मैं इरादा कर चुका वह हरगिज़ बदला नहीं जाता।

वज़ीर—महाराज ! मैं इरादा बदलने के लिये नहीं कहता. सिर्फ़ अर्ज़ यह है कि इस ख़ौफ़नाक इरादे को पूरा होने से पहले ग़ौर कीजिये ।

राजा—बस अब मैं तुझे हुक्म देता हूं कि ख़ामोश रह [श्रीपाल से मुख़ातिब होकर] आओ आओ अय श्रीपाल इधर आओ, हमने जो तुम्हें वचन दिया था उसको आज पूरा करते हैं बेटी मैना-सुन्दरी का विवाह तुम्हारे साथ करते हैं ।

यह कहकर राजाका मैनासुन्दरी से हाथ मिला देना ।

श्रीपाल—बहुत अच्छा महाराज मैं इसको अंगीकार करता हूं और आपको धन्यवाद देता हूं ।

गाना सोहनी नं० ६

मै०—चमनसे अब तो मैनाने उठाया आशियां अपना,
मुबारक अय वज़ीरो शाह यह तुमको मकां अपना;
मेरी क़िस्मतकी ख़ूबी है बना सय्याद है वह ही.
जिसे मैं बालपनसे जानती थी बाग़बां अपना:
न है अब महलकी ख़्वाहिश न गुलशनकी हवस बाक़ी.
बनेगा अब किसी जंगलमें जाकर आस्तां अपना:

बखूबी ग़ौरकर देखा यह मतलब का ज़माना है,
पिता माता न कोई भी न भ्राता है यहां अपना ;
तसल्ली दिलको दो बहना बजुज़ इसके नहीं चारा,
न कोई थी बहन मेरी यह कर लेना गुमां अपना।
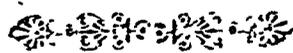
अंक १ दृश्य ५

जंगल

श्रीपाल और मैंनासुन्दरीका
मय वीरों के दिखाई देना

श्रीपाल—देखो हे प्राण प्यारी ! तुम मेरे पास न आओ, कहीं ऐसा न हो कि यह उड़न रोग तुम को भी सताय और मुफ्त चने के साथ घुन भी पिस जाय।

मैना०—स्वामी मुझसे अयसा क्या अपराध हुआ जो आप ऐसे कठोर बचनं कहते हैं

शेर

लिया है साथ जिसका भी निभाना ही मुनासिव है
लिखा है कर्म में जो आज़माना ही मुनासिब है

करूंगी मैं प्राण अपने बचाकर क्या बता दीजे
पती के वास्ते जां तक गंवाना ही मुनासिब है
न जब तक कुष्ट दूर होगा मेरा जीना अकारत है
पती सेवा में तन मन को लगाना ही मुनासिब है
मुसीबत में पिया मेरे धर्म बिन कौन है अपना
भ्रम तज के धर्म में जी लगाना ही मुनासिब है

तुम सब मनका भ्रम निवारो,
धर्म भजो मन धीरज धारो।
राग द्वेष सब मन से निकारो,
समता, संजम, शील, सवारो।
मैं अभी जिन यज्ञ रचाऊं,
बारह भावन मन में भाऊं।
तुम सब का तब कुष्ट हटाऊं;

गाना नं० ८

श्रीपाल—हुआ मालूम दूर अब ये मुसीबत होनेवाली है
मुझे इस दर्दो ग़म से जल्द फुरसत होने वाली है
सती अहसान तेरा उम्र भर में यह न भूलूंगा
तेरे हाथों से प्यारी मुझको राहत होने वाली है

मेरे दिन सीधे आये हैं मिली तुझसी सती मुझको
श्री अर्हंत की मुझ पर कृपा अब होने वाली है

मैना०—प्राणनाथ ! आप जो इतनी तारीफ़ फ़रमाते हैं गोया दासी को शरमाते हैं

शेर

अजब नहीं तासीर धर्म की ख़ाक को चाहे ज़र करदे
चिंवटीसे अख़तर सबसे बत्तर नोकरको अफ़सर करदे
अब आप चलिये चलकर जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करेंगे वो दुख निवारक हैं हम सबका दुख हेरंगे ॥

(सबका जाना)

अंक १ दृश्य ६

जैन मन्दिर

मैनासुन्दरी और श्रीपाल का मय ७०० कुष्टियों के
भगवानकी प्रार्थना करते हुए आना सबका—

गाना नं० ९

तेरा धन्यवाद गायें सरको झुकायें अय श्री भगवान,
तू हितकारी है सुखकारी अय श्रीभगवान।

दोहा

मैना——

ऐसी महिमा तुम विषय और धरे नहिं कोय,
सूरज में जो जोत है नहिं तारागण होय।

सब— तेरा धन्यवाद गायें०

दोहा

मैना——

सुख देवा दुख मेटवा यही तुम्हारी बान,
मुझ गरीब की बीनती सुन लेना भगवान।

सब— तेरा धन्यवाद०

———

मैना सुन्दरी का मन्दिर में दर्शन करने
के लिये जाना और वहां से गंधोदक
लेकर आना और सब पर छिड़कना।

गाना नं० १०

मैना—महाराज ! लाई हूं मैं जल न्हवन श्री जिनवरका,
इन्द्रादिक याको तरसें, परसत आनंद रस बरसें
यह गंदोदक सुखकारी, पानी है दुख परिहारी
हो जन्म सुफल सुरनरका ;
इसको जो अंग लगावे, कुष्टी सुन्दरता पावे
अन्धा संसार निहारे, यह पाप कर्मको जारे
दे पद हरि बल हरका ;
जब जन्म हुआ तीर्थंकर, सागर जल लाये भरकर
सुरपति गागर कर धारें, श्री जिनवरके सर धारें
हर्षा मन शचि इन्दरका ।
महाराज लाई हूं०

मैना सुन्दरीका सब पर गंदोदक
छिड़कना और सब कुष्टियोंका
अच्छा होजाना श्री मंदिरजीकी
प्रकम्मा देना और जैकारा
बोलना
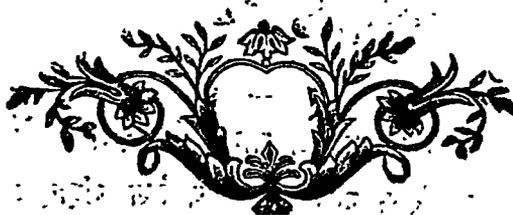
अंक १ दृश्य ७

जंगल

श्रीपाल की माता कुन्दप्रभा मय सहेलियों के
श्रीपालकी तलाशमें विलाप करती
जंगल में नज़र आती है

गाना सोहिनी नं० ११

है कहां श्रीपाल मेरा क्यों नज़र आता नहीं,
प्राण प्यारा दर्श अपना मुझको दिखलाता नहीं:
माता रुदन तेरी करे, तुझ बिन जिया किसपर धरे,
तू छुपा बेटा कहां जाकर नज़र आता नहीं:
राजा मरा जाना नहीं धीरज थी तुझको देखकर,
बेचैन हूं मैं बिन तेरे चैन एक पल आता नहीं:
ढूंढूं कहां जाऊं किधर मिलता नहीं कोई निशां,
जो मुनीश्वरजी ने बतलाया नज़र आता नहीं।

हाय अब किधर ढूंढूं, कहां जाऊं, तमाम उज्जैन मालवा देख डाला कहीं मेरे प्यारे पुत्र श्रीपाल का पता न मिला। श्री मुनि महाराज ने तो

मुझसे कहा था कि तू मत घबरा, उज्जैन नगरी में जा, वहां तू अपने लालसे जल्द मिल जायगी; मगर मैंनें तमाम उज्जेन मालवा देख डाला; कहीं मेरे प्यारेपुत्र श्रीपालका पता नहीं मिला। हाय क्या मुनि महाराज के बचन भी झूठ हो जाएंगे। हैं! यह मैं क्या कह गई। नहीं नहीं मुनीश्वरों के वचन कदापि झूठ नहीं हो सकते अर्हंत! अर्हंत!!

सहेली चन्द्रकला— महारानी जी दिल को धीरज दीजिये, यह सत्य है मुनीश्वरों के वचन कदापि झूठे नहीं हो सकते; मेरा दिल गवाही देता है कि हम वहुत जल्दी कंवरजी से मिला चाहते हैं। देखिये वो सामने से चंद देहाती आते हैं इनसे दर्याफ्त करें शायद कुछ पता चले।

(चन्द देहातियों का गाते हुए नज़र आना)

(तर्ज कँवरनिहालदे)

हे रच दीना ख्याल कोई बाजी बाजीगर ने

सहेली—क्यों भाई तुम कौन हो और कहांसे आयेहो

देहाती१—हम तो इड़े ही रहैंसैं तुम इड़े क्यों आई सो

कुन्द०—अय मेहरबान किसानों ! मैंने सुना है मेरा पुत्र श्रीपाल इसी जंगल में रहता है मैं उसको तलाश करती हूं अगर तुम श्रीपाल को जानते हो तो बताओ मैं उसीको दर्याफ्त करती हूं।

देहाती१—हम सिरी सुरी पाल को तो जाणे को ना पर एक माणस ने अड़े जंगलमें एक हवेली चिणाई से सो वो म्हारे राजा का जमाई से।

कुन्द०—यह क्या राजा का जवाई और रहने के लिये जंगल में हवेली बनाई !

देहाती०२— हमवह !

कुन्द०—यह क्यों

देहाती० २ जब वह अड़ आया उसके सरीर माहें कोढ़ सो अब तो म्हारे राजा की छोरी ने उसकी टहल करके ऐन चोखो कर दियो।

देहाती१— अरे हट उत यों ना बोला करे हैं, जी म्हारी राजकंवारी ने उसकी खिजमत करके उसने बिलकुल राजी करदीना है।

कुन्द—हां हां अय भोले भाले किसानो हम उन्हींको

दर्याफ्त करते हैं । वह मकान यहां से कितनी दूर है ?

देहाती१— ओह देख, दीखती नाह तणक सीदूर है ।

कुन्द— महरबान किसानो हम तुम्हारा बहुत शुक्रिया अदा करते हैं ॥

सब देहाती— ना हजूर ना हजूर ना हजूर

सब देहातियों का सलाम करना
कुन्दप्रभा वग़ैराका जाना ।
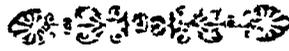
अंक १ दृश्य ८

महल

महल के बाहर एक दर्बान का बैठे नज़र आना
और श्रीपाल की मां का मए चन्द
सहेलियों के आना ।

कुन्दप्रभा—[सहेली से] चन्द्रकला ! जाओ तुम इस दर्बान से दर्याफ्त करो यह किसका मकान है;

चन्द्र०—क्यों अय दर्बान ! यह है किसका मकान ?

दर्बान—यह राजाके जंवाई श्रीपालका है स्थान ।

श्रीपालका मय मैनासुन्दरी इत्यादिका महल से बाहर आना और अपनी माताको देखकर उनके चरण लेना।

श्रीपाल—कौन ! माताजी !

कुन्द०—आहा मेरा प्यारा पुत्र श्रीपाल बेटा

शेर

सुना तो सही मुझको तू अपना हाल,
मिटा कुष्टका तेरे क्योंकर मलाल ?

श्रीपाल—माताजी मेरे कुष्ट को हटानेवाली यह आप के चरणों में खड़ी है, इसी ने सिद्ध चक्र की पूजा करके भगवान के स्नान का महा पवित्र जल हमारे बदन से लगाया है, इसी गंदोदक के प्रसाद से हम सबका कुष्ट रोग हटाया है।

कुन्द०—मगर बेटा ! यह कौन है जिसने तुम्हारी ख़ातिर इतना दुःख उठाया है ?

श्रीपाल—माताजी यह इस उज्जैन नगरी के राजा की पुत्री हैं ; एक वक्तमें इनके पिताजी को इनपर क्रोध आया था उस वक्त मुझको कुष्टी देखकर इस देवी को मेरे साथ ब्याहा था।

कुन्द०—धन्य है अय सती धन्य है तूने धर्म का जलवा दिखाया, अपने शील का नूर चमकाया, मेरे पुत्र और सात सौ वीरों का कुष्ट हटाया सतियों का मरतबा बढ़ाया।

शेर

मैना०—

फ़यादा जो कुछ हुआ है आप के इक़्बाल से,
वर्नः मैं क्या हूं भला खुद ही गुनहगारों में हूं ;
मत करो तारीफ़ मेरी दोष लगता है मुझे,
मैं तुम्हारी चरण रज हूं और परस्तारों में हूं।

मैनासुन्दरी अपनी सास के चरण लेती है और कुन्दप्रभा उसको आशीर्वाद देती है।

कुन्द०—तेरे सतशील की यह जगमें कहानी होगी
होगी पटरानी तू पूरी मेरी बानी होगी

श्रीपाल—माताजी आप महल में पधारिये और आराम कीजिये।

सबका महल में जाना।

अंक १ दृश्य ९

श्रीपालका शयनालय

(श्रीपालका नींद से आँखें मलते हुए उठना)

श्रीपाल—उफ़ आज मेरा दिमाग़ चकराता है परदेस जाने को जी चाहता है मगर साथ ही माताजी व मैनासुन्दरी की जुदाई के खियाल से दिल पाश. पाश हुआ जाता है। आह !

श्रीपालकी आह के साथ मैनासुन्दरी का यकायक जाग उठना और अँगड़ाई लेतेहुए अपने पतिसे पूछना

मैना०—उचाटी किसलिये है क्यों उदासी मुंहपे छाई है
वजह क्या है नहीं जो नींद तुमको आज आई है
यह सूरत किसलिये गमगीनसी तुम ने बनाई है
पिया सच हाल बतलादो कि क्या दिलमें समाई है

श्रीपाल नपूछो मुझसे कुछ प्यारी कि क्या दिलमें समाई है
बताऊं क्या तुम्हें अब मैं कोई दममें जुदाई है

मैना० यह कैसी बात स्वामी आपने इसदम सुनाई है
जिसे सुनकर घटा रंजो अलम की दिल पे छाई है
कहीं परदेस जाने का हुआ क्या आपका मनशा

तुम्हें मेरी क़सम कहदो वही जो दिलमें आई है

श्रीपाल—मेरे माता पिता और देससे कोई नहीं वाक़िफ़
बनाऊं राज पाट अपना यही दिल में ठैराई है
नहीं मुझसे कोई वाक़िफ़ है इससे एक हरफ़ ज्यादा
कि घर राजाके रहता है यह राजा का जंवाई है

मैना०—हे स्वामी यह ख़ियाल आपका दुरुस्त है; आप यहां से चतुरङ्ग सेना लेकर चलिये और अपना राजपाट लेकर सुख भोगिये;

श्रीपाल—हे चन्द्रवदने आपने जो कहा ठीक है परन्तु क्षत्री लोग किसीके आगे हाथ नीचा नहीं करते हैं; और कदाचित् कोई ऐसा करे भी तो ऐसा कौन कायर और निर्लोभ पुरुष होगा जो दूसरोंको राज देकर आप प्रायश्चित्त जीवन व्यतीत करे; संसार में कनक, राज, कामिनी, कोई किसी को खुशी से नहीं सोंप देता और यदि ऐसा भी हो तो मेरा पराक्रम कैसे प्रकट होगा? अपने वाहुबल से प्राप्त कियाहुआ राज्य सुखका दाता होताहै इस लिये हे वरनारी मैं विदेश में जाकर निज वाहुबल

से राज्य वैभव प्राप्त करूंगा और बारह बरस में आज ही के दिन तुमसे मिलूंगा।

मैनासुन्दरी की आंख से आँसू टपकते हैं।

मैना०—हे स्वामी आपकी आज्ञा मुझे शिरोधार्य है मेरी क्या शक्ति जो आपको समझा सकूं

शेर

खुशीसे जाइये बालम तुम्हें जाना मुबारक हो,
बरस बारहमें तुमको लौटकर आना मुबारक हो:
न भूलो मित्रकी सेवा, न गुरु आज्ञा स्वनिज माता,
सदा जिन-धर्म, जिन-शासन मुबारक हो मुबारक हो:
मिलेंगी राजकन्या आपको परदेस में लाखों,
भुलाना दिलसे मत मुझको गमन तुमको मुबारक हो।

दोहा

श्रीपाल—सुन सुन्दर मैना सती धीरज मन में आन
मैं तुझको भूलूं नहीं जान वचन परमान

मैना०—प्राणनाथ आप क्षमा कीजिये, एक बात और कहती हूं कि यदि आप अपनी प्रतिज्ञा पर बारह बरस पूरे होनेपर अष्टमी तक न पधारे तो मैं नवमी के प्रातः काल जिनेश्वरी दीक्षा लेकर.

इस संसार के जाल को तोड़, अविनाशी सुख के लिये इस पराधीन प्रजा से छूटने के उपाय में लग जाऊंगी ।

दोहा

श्रीपाल—बार बार यों मत कहो सुन सुन्दर वरनार
जो मैं ने तुमसे कहा होगा वही विचार

गाना नं० १२

(तर्ज़—परदेस छोड़ नहीं जाओ)

मैना०—परदेस छोड़ नहीं जाओ
श्रीपाल—नहीं इतना प्यारी घबराओ
मैना०—मोरी मानोजी, मोरी मानो जी,
किसी जतनसे संग मोहे ले जाओ; परदेस०
कब तक आओगे पिया प्यारे हाल मुझे बतलाओ।
श्रीपाल—मत कर दिल में रंजो अलम ग़म,
आऊं बारह बरस दिन आठम नहीं कल्पाओ ।
मैना०—परदेस छोड़ नहीं जाओ

बस प्यारी अब रंजो ग़म दूर करो, महल में चलो ; मैं मातांजी के पास जाता हूं उनसे आज्ञा

लेकर विदेस जाऊंगा और तुम यहां आनन्द मे रहना और अपनी सास की सेवा मान सम्मान करना और नित्य प्रति जिनेन्द्र देवका वन्दन करना ।

दोहा

आऊं बारह वर्ष में वार अष्टमी ठीक
निश्चय इसको जानियो ज्यों पत्थरकी लीक

अंक १ दृश्य १०

महल

शयनालय का महल की सूरत में बदल जाना
श्रीपालका मस्तक झुकाये अपनी माताके
आगे नज़र आना ।

कुन्द०—क्यों पुत्र इस समय ऐसी आतुरता से आने का क्या कारण है ?

शेर

श्रीपाल—चलें परदेशको यह बात अब दिलमें विचारी है.
इजाज़त हमको दे दीजे यही अर्ज़ी हमारी है.

कुन्द—न होनी वात बेटा तूने यह कैसी सुनाई है,
जिसे सुनते ही एक वहशतसी मेरे दिलपे छाई है;
धरूंगी मैं ज़िया किसपर तेरे बिन लाडले मेरे,
यह तेरी वात अय बेटा नहीं मुझको सुहाई है;
तू अपने हाथसे पहले जुदा कर सीसको मेरे,
अगर परदेस जाने की तेरे दिलमें समाई है।

श्रीपाल— शेर

मेरी माता तुम्हें धीरज बांधान ही मुनासिब है,
मुझे परदेस जाने दो कि जाना ही मुनासिब है ;
बहुत दिन हो गये सुसराल में रहते हुए मुझको,
भुजा अपनीका बल अब तो दिखाना ही मुनासिब है;
पिताका नाम और कुल देस मेरा कौन जाने,
मुझे अब राजपाट अपना बनाना ही मुनासिब है;
मिलूंगा आपसे बारह बरस में आके फिर माता,
तुम्हें जिन-धर्म में मनको लगाना ही मुनासिब है;

नसर— हे माता जिस पुत्रसे पितादि गुरुजन कुल देश का नाम न चले वह पुत्र होना न होने के समान है; इसलिये हे माता जी आप मुझे सहर्ष आज्ञा दीजिये जिससे मेरी यात्रा सुफल हो; और आप

की वधु मैनासुन्दरी और सातसौ आज्ञाकारी सुभट आपकी सेवा में रहेंगे, मैं भी बारह वर्ष में आप की सेवा में आपहुंचूंगा।

कुन्द० अय पुत्र तुझे जाने की आज्ञा देते हुये मेरा जीवन निकलता है परन्तु अब मैं ज़ियादा कुछ कह भी नहीं सकती हूं जो तुमने जाने का पूरा विचार कर लिया है तो जाओ, श्री जिनेंद्र देव गुरु और धर्म के प्रभाव से तुम्हारी यात्रा सुफल होगी; परन्तु विदेश का काम है; बहुत होशियारी से रहना, लोभ न करना, पर धन पर दृष्टि न डालना; अपनी स्त्री के सिवा हर स्त्री को मा बहन समझना।

शेर

श्रीपाल माता वचन को आपके हरदम निभाऊंगा
आज्ञा से हरगिज़ आपकी बाहर न जाऊंगा

कुन्द० एक सहेली से अच्छा कमला जाओ और तिलक सामग्री लाओ।

कमलाका जाना और एक थालमें हुए [illegible] और फूल [illegible] लाना और कुन्द प्रभाका [illegible] कुंकुम का तिलक करना आशीर्वाद देना

दोहा

छन्द०-श्री बढ़े अति बल बढ़े बढ़े धर्म से नेह
चौरङ्ग दलको संग ले आइयो सुत निज गेह
धन्य मुहूरत धन घड़ी धन्य सुअवसर आय
जादिन तेरो बदन यह नैनन देखूं चाय

श्रीपाल का प्रणाम करके श्री
पंचपरमेष्टीका उच्चारण करते
हुये जाना

अंक २   दृश्य १

जंगल

एक वीरका जंगल में कुछ विद्या सिद्धि करते नज़र आना.

श्रीपालका उसी जंगलमें वीरके पास आना

गाना नं०१३

तर्ज़ —बदकिस्मतों से हो गये सामां नये नये

श्रीपाल दिखला रहे हैं कर्म क्या सामां नये नये
रंजो अलम हैं जानके ख़्वाहां नये नये
पाया न चैन जबसे संभाला बदन का होश़
सदमे उठाये सैकड़ों हिरमां नये नये
देखेंगे कर्म और दिखाता है क्या अभी
आते नज़र हैं ख़्वाबे परीशां नये नये
क्योंकर न दिलमें दर्द हो लबपर फुगां न हो
चर्के लगें जो सैकड़ों हर आं नये नये
मिटता है एक रंज तो होता है दूसरा
कर्मों के फल हूं देखता हर आं नये नये
हाज़िर करम का फल है यहतू देखता है क्या
आते नज़र जो तुझको हैं सामां नये नये

हे मित्र तुम कौन हो ! और किस मंत्र का आराधन कर रहेहो ? तुम्हारा चित्त क्यों चपल हो रहा है ?

वीर हे स्वामी मेरे गुरुने मुझको विद्याओं का मंत्र दिया है, जिसका मैंने जपन प्रारम्भ कियाहै परंतु न तो मेरा मन स्थिर होता है और न यह मंत्र सिद्ध होता है आप सहन शील हैं इस मंत्र को आराधें, कृपा करके मेरे इस काम को साधें।

श्रीपाल हम रास्ता चलते मुसाफ़िर हैं विद्या साधन की क्रिया को क्या जानें।

वीर हे स्वामी आप मुझपर कृपा करें और एक वार इस मंत्र को आराधें मुझे निश्चय है कि ये विद्याऐं जल्द सिद्ध हो जायेंगी

श्रीपाल अच्छा अगर तुम्हारा यही खियाल है तो मैं इस मंत्र का जपन करता हूं (श्रीपल कुछ देर मंत्र जपनेंके बाद) अय मित्र तुम्हारे ही मुंह का कहना हुआ. तुम्हारी विद्याएं सिद्ध होगयीं।

वीर—धन्य है आपको धन्य है जो ऐसे कठिन

काम को एक क्षणमें आसान किया। अब मेरी यह प्रार्थना है कि ये विद्याएं आप ही रक्खें क्योंकि ये विद्याएं आप ही जैसे पुरुषों के रखने योगय हैं, मुझ जैसा आदमी इन विद्याओं को क्या रख सकता है; जब मुझसे ये सिद्ध ही न हो सकीं तो मैं इन विद्याओं को रख ही क्या सकूंगा।

श्रीपाल—नहीं नहीं तुम्हारा यह ख़याल बिलकुल गलत है ये विद्याएं सिर्फ़ तुम्हारे निश्चय ही से सिद्ध हुई हैं और तुमको रखनी पड़ेंगी।

वीर—बहुत अच्छा अगर आपकी यही खुशी है तो मैं इन विद्याओं को रखने को तय्यार हूं। मगर जहां आपने मुझपर इतनी कृपा की है वहां इतनी और कीजिये कि ये दो बड़ी विद्यायें शत्रुनिवारन व जलतारन हैं ये मुझसे आप खुशीसे लीजिये। क्योंकि ये विद्याएं मेरे पास रहनी बहुत कठिन हैं।

श्रीपाल—अगर तुम्हारी यही खुशी है तो उन दोनों विद्याओं को तुमसे लेता हूं।

श्रीपाल का विद्या लेना और वीरका नमस्कार करके जाना।

जबसे यह विद्याएं सिद्ध की हैं, तबीअत कुछ भारी सी मालूम होती है ; बहतर हो अगर कुछ देर यहां आराम करलूं तो आगे चलने का विचार करूं।

श्रीपालका सो जाना और चन्द सिपाहियों का एक महाजन के साथ एक आदमी जलदेवी की भेटके वास्ते तलाश करते हुए आना और श्रीपालको सोता हुआ देखकर पकड़ ले जाने की कोशिश करना और श्रीपाल का जाग उठना।

गाना

सब सिपाही—

कबतक भटकेंगे हम यार, ये मैदान नद्दी नाले,
छाने झरने, झाड़ी, झील; काटे चक्कर सौ सौ मील;
लौटें घरको क्या है ढील; हम किस बलाके पड़गये
पाले। कबतक भ०
तनपर तो है ज़रकी झूल; मुंहपर जमी है नो मन धूल;
हिल गई भाई अपनी चूल; पड़ गये पाउंमें लाखों
छाले। कबतक भ०

रामसिंह सिपाही—देखो भाई पहाड़ी रास्तों में बड़ी दुशवारी है, राह तक चलना भी भारी है।

तेजसिंह सिपाही—हां भाई अब तो एक क़दम भी आगे नहीं उठता ; अरे रे रे रे।
अरे भाई देखो तो यह बीच जंगल में कौन पड़ा सोता है ; मुझे तो कोई जिन या देव मालूम होता है।

रामसिंह०—वाह भाई वाह ! क्या कहना है, तूने इतने दिन तो पलटन में नोकरी की मगर रहा कोरा काठ का ही............

तेजसिंह०—अरे चों चों

रामसिंह०—अरे चों चों काहे की, जिसको तू जिन और देव बताता है वह तो भला चंगा इन्सान नज़र आता है।

तेजसिंह०—अरे का कहा ? इन्सान ? का सचमुच इन्सान ?

रामसिंह०—हां हां इन्सान है इन्सान।

तेजसिंह०—बस अब तो खुश हो और बहुत खुश हो इसे सेठजी के पास पहुंचाओ और मुंह मांगा इनाम पाओ। क्यों यारो सच है ना ?

सब सिपाही—हां यारो पागल हो तो क्या, मगर बात ठिकाने की कहते हो; चलो सब चलकर इसे पकड़ लें।

१ सिपाही—अबे पकड़ पकड़।

२ सिपाही—अरे तू इसके हाथ तो पहले रस्सीसे जकड़।

श्रीपाल का घबराकर उठना और तेजसिंह सिपाही का चिल्ला कर कहना।

तेजसिंह०—बापरे खाया।

श्रीपाल—अरे तुम कौन हो ? चोर हो या लुटेरे जो मुझे सोते में आन दबाया। मालूम होता है कि तुम्हारा काल तुम्हें यहां खींच लाया। देखो अगर तुम अपने यहां आने का हाल साफ़ साफ़ न बताओगे तो सब के सब जानसे मारे जाओगे अपने किये की सज़ा पाओगे।

महाजन अरे भाइयो यहतो कोई बड़ा बहादुर मालूम

होता है। अगर अब इससे ज़राभी हाल छुपाया तो बस जानका होगया सफ़ाया।

रामसिंह सिपाही—बस तो जनाब आप इनको सब हाल चुपके से बता दीजिये।

महाजन अजी हे सिपाही जी इतना कामतो महर-बानी करके आपही कीजिये

रामसिंह तबेले की बला और बन्दर के सर, और सुन लीजिये

श्रीपाल अरे यह तू दिल ही दिल में क्या बड़ बड़ा-ता है, साफ़ साफ़ हाल क्यों नहीं बताता है

रामसिंह अजी हजूर मैं तो कुछ नहीं बड़ बड़ाता हूं आपको अपने यहां आने का हाल सुनाता हूं। एक धवल सेठ साहुकार हैं: उसके सागर में जहाज अटके हैं वह हमारे महाराज वृपकच्छपुर पट्टन के पास एक आदमी जलदेवी की भेंट देने के लिये मांगने आया था: हमारे महाराज ने हमें हुक्म दिया कि एक आदमी कहीं से पकड़कर इनके हवाले करदो: हमने बमूजिब हुक्म इस

काममें बहुत सर खपाया; कहीं कोई भूला भटका नजर न आया; लाचार अपनी क़िस्मत को बुरा भला कहते जाते थे और महाराज के गुस्से के ख़याल से होश उड़े जाते थे कि रास्ते में आपको बेख़बर सोते पाया ; बस तबही यह गुस्ताख़ाना अम्र हमसे ज़हूर में आया; अब आप हमारी जानके मुख़तार हैं हम सब आपके ताबेदार हैं

श्रीपाल अय ग़रीब सिपाहियो मत घबराओ; मैं तुम्हारी रास्तगुफ़तारी से बहुत खुश हुआ; अब कोई भी ऐसा नहीं है जो मेरे सामने तुमको ज़रा भी तकलीफ़ पहुंचा सके; चलो मैं तुम्हारे साथ खुशी से चलता हूं और मुझे अभी यह भी देखना है कि मेरे कर्म अभी मुझे क्या क्या दिखलाते हैं

सब सिपाही—धन्य है ऐसे पुरुषों को जो दूसरों की खातिर अपनी जान तक की भी परवा नहीं करते

अंक २ दृश्य २

समुद्र

धवल सेठका अपने साथियों के साथ
मशवरा करते हुए नज़र आना

धवल सेठ—क्यों अय मल्लाहो ! जहाज़ों के चलने की कोई तदबीर निकाली ?

मल्लाह—हुजूर हमारी तो अक़ल हो गई तदबीरों से खाली।

सेठ—अफ़सोस ! और मेरे आदमी महाराज बृग-कच्छपुर पट्टन के सिपाहियों के साथ एक आदमी जलदेवी की भेट चढ़ाने के लिये पकड़ने गये थे, मगर अभी तक नहीं आये ; अब जिसक़दर देर होती जाती है, तबीअत ज़ियादा घबराती है ; हां, अच्छा देखो, अय मल्लाहो तुम जाओ और जल्द इस बातकी ख़बर लाओ कि मेरे आदमी अभी तक कहां हैं, मेरी आंखों में दुनिया अंधेर हुई जाती है।

मल्लाह—अच्छा हजूर हम जात हैं और उनको ढूंढ लात हैं (थोड़ी देरमें मल्लाह का वापस आकर कहना) महाराज आप के नोकर आवत हैं और एक आदमी को बीचमें घेरे लावत हैं.

महाजन और सिपाहियों का श्रीपाल को पकड़े हुए धवल सेठके पास लाना और यह कहना

महाजन—सेठजी मनका सोच दूर करो, देखो आपके भाग्य से कैसा लक्षणवन्त पुरुष मिला है।

सेठ—आहा खूब हुआ जो तुम इस पुरुष को ले आये ; बस अब तुम इसको जल्द ले जाओ, स्नान कराओ, वस्त्र आभूषण पहनाओ, जलदेवी की पूजा कराओ और इसको बलि चढ़ाओ ।

सेठजी का हुक्म पाकर सिपाहियों का श्रीपाल को हाथ पकड़कर ले आनेकी कोशिश करना और श्रीपाल का झटका मारना और सब सिपाहियों का गिर पड़ना ।
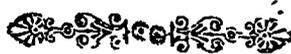
गाना

श्रीपाल—

मूरख बन्दे हियेके अन्धे ध्यान हियेमें धरकर देख.
जीव हतेसे कहो तो कैसे चलेंगे परोहन हितकर देख:
कितने तेरे वीर सूरमा योधा क्षत्री गिनकर देख.
जो मैं अपना बल प्रकाशूं छिनमें मारूं लड़कर देख:
तेरी किसने मत हरी, तेरी मौत आ लगी. मैं कोठी
सटवरी.
देता मुझे बली, कुछ मनमें कर शरम. अय पापी बेधरम,
ले शरण जिनधरम, तज पापका मरम, हितकर देख:
हितकर देख । मूरख बन्दे०

दोहा

सेठ—

दया जो हमपर कीजिये तुम हो गुन गम्भीर.
हाथ जोड़ बिनती करूं माफ़ करो तकसीर:
ना तुमसे कुछ बैर है ना हम मारन काज.
मो मन में येही बसी चलें प्रोहन आज।

श्रीपाल—अच्छा अगर यह बात है तो क्यों घबराते हो

सब मिलकर जहाज़ पर चढ़ो तुम.
बे फ़िक्र रहो कुछ नहीं डरो तुम:

सिद्ध चक्रका ध्यान दिलमें लाऊँ,
तो पाऊँ से जहाज़ को चलाऊँ।

सुमतिप्रसाद मंत्री का सेठजी से श्रीपाल को साथ ले जाने को कहना

सुमति—सेठजी! यह कोई बड़ा लक्षणवन्त और विद्वान पुरुष मालूम होता है; इसको अपने साथ रखने से हमारे महान् कार्य सिद्ध होंगे।

सेठ—हे श्रीपाल! अगर तुम हमारे साथ चलो और सदा हमारे ही साथ रहो तो क्या अच्छा हो?

श्रीपाल—मैं आपके साथ खुशीसे चलने को तइयार हूं अगर आप अपने मालका दसवां हिस्सा मुझे दें।

सेठ—मैं अपने मालका दसवां हिस्सा तुमको खुशी से देता हूं; और मेरे कोई पुत्र भी नहीं है, इसलिये मैं तुमको अपना धर्मका पुत्र बनाता हूं चलो मेरे साथ आओ और जहाज़ों को चलाओ।

सबका जय बोलना और श्रीपाल का जहाज़ को चलाना।

श्रीपाल—लो देखो:—

ये चलते हैं जहाज़ सारे,
बोलो धर्मकी जय एकबारे।

सबका जय बोलना और जहाज़ों का रवाना होना और पर्दे का गिरना।

अंक २ दृश्य २

जंगल

एक डाकुओं का सरदार अपनी बहादुरी की तारीफ़ करता हुआ आता है

डाकुओं का सरदार—ओह किसको मालूम नहीं कि मैं एक शहज़ोर, मनचला, फ़ितरत का पुतला, तेज़ोतर्रार, खूंख़ार, डाकुओं का सरदार हूं और मेरी शुजाअत का तमाम दुनियां में वह सिक्का बैठा हुआ है कि बच्चे मेरा नाम सुनते ही रोनेसे बन्दहो जातेहैं; मर्दोंके मुंहपर कुफ़ल लगजाते हैं और मेरी तलवार की वह धाक बँधी हुई है कि क्या ताक़तमेरी तेग़ की ज़र्ब कोई उठाये : जो रुस्तम भी मेरे सामने आये तो कांप जाये ।

शेर

चमके जो मेरी तेग़ तो सिरेंग्व तलमलाये,
गुस्से से सूये चर्ख़ जो देखूं क़यामत आये :

और मेरे पास मालोज़र भी इस क़दर है कि कोई ऐसा वीराना नहीं जहां मेरा ख़ज़ाना नहीं :

और कोई ऐसा मरघट या क़बरस्तान नहीं जहां मेरी दौलत का निशान नहीं ; मगर हां मेरे आदमी एक जगह थांग लगाने गये हुए हैं क्या वजह जो अब तक नहीं आये, आहा वो आते हैं।

डाकुओंका आना और अपनी अपनी तलवार अलम करके अपने सरदार को सर झुकाना और सलामी देना।

सब डाकू—आहहा हमारे सरदार नामदार

सरदार—आओ आओ अय मेरे बहादुरो तुम्हारी ही तलवार ने मुझे यह दिन दिखाया है कि एक मामूली इन्सान से इस क़दर मालदार बनाया है अगर क़ारूं सा मालदार भी मेरे सामने आये तो मेरे ख़ज़ाने को देखकर रश्क खाये। मगर हां यह तो बताओ जिस जगह तुम्हें भेजा था वहां जाकर तुमने क्या थांग लगाई ?

गुलाब डाकू—सरदार नामदार वहां तो कुछ पता न चला मगर हां आपके इक़बाल और महिममाया की कृपा से घर बैठे सोने की चिड़िया हाथ आई

सरदार—वह क्या ?

गुलाब—वह यह कि यहां से थोड़ी दूर पर समुद्र के किनारे किसी सेठ के बहुत से जहाज़ ज़रो जवाहर से भरे हुए आये हैं, मगर इसके साथ ही यह बात है कि उन जहाज़ों के साथ आदमी बे शुमार हैं और एक से एक ज़ियादा बहादुर और होशियार हैं।

सरदार—होने दो क्या पर्वा है, यह अज़दहे की ज़बान तलवार जौहरदार है, चर्ख़ की बिजली से ज़ियादा तेज़ इसकी धार है:—

रविश से इसकी वरिश से इसकी,
लहू के दर्या वहे हुए हैं:
अदूकी लाशों के लाखों मक़तल,
हजारों जंगल पटे हुए हैं।

तुम इस क़दर क्यों घबराते हो
तुम्हारे वारकी दुशमन न हरगिज ताब लायेगा
अजल आयेगी जिसके सर, मुक़ाबिल वो ही आयेगा

गुलाब—दुरुस्त है

सब डाकू—बजा है, जो कुछ आपने कहा हम

सब लोग एक जबान होकर इस की ताईद करते हैं, और जबतक हमारी रगों के खूनमें जोशे शुजाअत, या जबतक हमारे जिस्म में जान, और जान में दिल, और दिलमें ताक़त है

हम मुक़ाबिलमें लड़ेंगे लशकरे खूंख़ार के
हैं सिपर चहरे हमारे सामने तलवार के

सरदार शाबाश अय मेरे बहादुरो शाबाश, मुझे तुमसे ऐसी ही उम्मीद थी; और मैं भी क़सम खाकर कहता हूं कि अपनी जान लड़ा दूंगा; दुशमनों को इस तलवार की धार से हमेशा के लिये जमीन पर सुला दूंगा; अव्वल तो मुझे उम्मीद है कि हमारे गुरोह को देखकर उन लोगों के पैर उखड़ जायेंगे, वो मालो असबाब छोड़कर भागते नज़र आयेंगे और जो उन्होंने हमारा मुक़ाबिला किया तो :—

शेर

खूनकी नदी बहेगी फिर मेरी तलवार से,
खूनकी मौजें उठेंगी तेग़े जौहरदार से।
क़ब्र में रुस्तम का दिल हो खून इस पैकार से,

खून टपके खून बरसे हर दरो दीवार से ।
जिस तरफ़ देखो उधर दर्या रवां हो खून का,
यह जमीं हो खूनकी और आस्मां हो खून का ।

गाना

सब डाकू—चलो जंग करें; ना यह रंग करें;
मिल ढंग करें; दिल तंग करें; सभी संग करें ।
चलो यारो सारो मारो मारो छापा मारो घात करें
सभी संग करें ।
हम ज़री सितमगरी २ दिखाएं; यारो सिपहगरी
दिलावरी दिखाएं हां हां हां हां हां हां काम में
नाम है यार । इधर उधर से भरके कोसे जग
से हम फिरें; चलो जंग०

सबका नारा लगाते हुए चले जाना

अंक २ दृश्य ८

समुद्र

समुद्र के किनारे धवल सेठ का जहाज पर
दिखाई देना और डाकुओं का आना

मल्लाह—सूर वीरो होशियार हो जाओ. देखो यह
सामने से डाकुवों का गुरोह दल बादल की तरह
उमडा चला आता है ।

सेठ—ऊँह आनेदे देखा जायगा क्यों घबराता है।

सरदार—ओ बद नसीब अजल गिरिफ्ता मुसाफ़िरो! अगर तुम अपनी ज़िन्दगी चाहते हो तो अपना तमाम ज़रो जवाहर हमारे हवाले करदो वर्नः बहुत पछताओगे मारे जाओगे।

सेठ—ओ बुज दिल लुटेरे! इस खियाले खाम को दिलसे भुलाओ शेरों के मुकाबिले से बाज आओ वर्नः कोई दममें यह सारी लनतरानी भूल जाओगे।

सरदार—हां यह बात है, तो लो सँभालो एक बुजदिल के वार को; (कुछ देर लड़ने के बाद) हां बांधलो नाहिंजार को।

डाकुओंका सरदार धवल सेठके सिपाहियोंको मारता है और धवल सेठ की मुश्कें बांधकर ले जानेका हुक्म देता है, इतने में श्रीपाल आता है और डाकुओं को ललकारता है डाकू श्रीपाल को देखकर डर जाते हैं और धवल सेठ को छोड़ देते हैं।

श्रीपाल—ठैरो ओ कायरो अब एक क़दम भी आगे बढ़ासको यह तुम्हारी मजाल नहीं अगर तुमसे न लूं बदला तो मैं श्रीपाल नहीं।

सरदार—म म म मगर जनाब आप कौन हैं जो दूसरों की खातिर अपनी जान को मुसीबत में फँसाते हैं ?

श्रीपाल—जी हां, हम तो जान मुसीबत में फँसाते या न फँसाते हैं मगर अब आप के पाऊँ हमें कोई दम में उलटे नज़र आते हैं।

सरदार—हे स्वामी आप का वचन सत है हम आप के मुक़ाबिले की ताब नहीं ला सकते हैं अब हम सब आप की शरण हैं।

जो बख्शो तो ज़हे क़िस्मत,
न बख्शो तो शिकायत क्या
सरे तसलीम खम है जो
मिज़ाजे यार में आये।

श्रीपाल—पिता जी फ़रमाइये अब इन के लिये क्या हुक्म है ?

सेठ—आहा बेटा श्रीपाल! खूब हुआ जो तुमने इन सब डाकुओं को ज़ेर किया! अब बहतर यह है कि इन के हाथ पाऊं कटवा कर इन के घड़ों

को जंगल में फिंकवा दो, ताकि मुर्दारख़ार जानवर इन का गोश्तोपोस्त नोच नोच कर खाएँ, और इनकी हालत को देखकर और लोग भी इबरत पाएं।

कुमतिप्रसाद और मेरा यह ख़ियाल है कि इन नाबकारों के जिस्म पछनों से गुदवा कर इन के ज़ख़्मों में नमक भरवा दो, अगर यह सज़ा भी इनके लिये काफ़ी न हो तो इनको निस्फ़ जमीन में दफ़न कराकर इनपर शिकारी कुत्ते छुड़वा दो।

विदूषक और मैं यह कहता हूं कि सब झगड़े को गोली मारो इनपर मिट्टी का तेल छिड़क कर दियासलाई दिखा दो।

श्रीपाल ये सब आप लोगों का कहना बजा है, मगर जैनधर्म में जीव हत्या ना रवा है; और शरण आये को मारना भी बुरा है, पिताजी! इसलिये मैं सब को छोड़ता हूं

सेठ अच्छा पुत्र जैसी तुम्हारी मर्ज़ी।

तमाम-डाकू—हे महाराज धन्य है आप को और आपके धर्म को, हम लोग भी आज से जैनधर्म का पालन

करेंगे, और चोरी, डकैती. जीव हत्या कभी न करेंगे ; इन सब बातों की आपके सामने क़सम खाते हैं ; और सात जहाज़ जो रत्नों के भरे समुद्र के किनारे खड़े हैं वो आप के चरणों में भेट चढ़ाते हैं ।

सब डाकुओं का कुरान पर हाथ रख [illegible] आगे गर्दन झुकाना ।

अंक २ दृश्य ५

बाज़ार

पण्डित नन्हे मिश्र का प्रवेश

पण्डित०—भाई वाह वाह आंख खुलते ही किसी ऐसे भले आदमी के दर्शन पाये कि सुबह ही सुबह दो जिजमानों के घर से नोते आये : पहले तो लाला होरीराम के हां जाऊंगा और जाते ही लड्डू, पेड़े, बरफ़ी, गूंझे खूब ही जी भरके उड़ाऊंगा और जब दक्षिणा वग़ैरा ले चुकूंगा तो फिर घोरीराम के मकान पर जाऊंगा वहां पहुंच कर थोड़ीसी चखा चुर्वी करके खाना पीना [illegible]

जीके लिये बांध लाऊंगा और जो दक्षिणा मिलेगी उसकी खूब चका चकी की भांग उड़ाऊंगा।

श्रीपाल का आना और पण्डितजी का जाते जाते श्रीपाल से टकर खाकर गिर पड़ना

पण्डित०—अरे रे रे रे मेरा तो कचूमर ही निकाल डाला

श्रीपाल—महाराज आपके कहीं चोट तो नहीं लगी? मुझसे वे ध्यानी में यह अपराध हुआ है आशा है कि आप क्षमा करेंगे।

पण्डित अरे वाह भाई यह तो अच्छी की सफ़ाई, पहले तो मुझे गिरा दिया और फिर कहते हो क्षमा कीजियेगा; जाइये जाइये मैं ऐसे आदमी से बात नहीं करता हूं आप अपना रास्ता लीजियेगा।

श्रीपाल अजी महाराज आप व्यर्थ क्रोध करते हैं, मैं ने आपके मुख से अभी अभी यह वचन सुना था कि आप कहीं दक्षिणा लेने जाते हैं यह लीजिये आप दक्षिणा मुझसे लीजिये और कृपा करके कोई जैनमन्दिर क़रीव हो तो बता दीजिये।

नन्हे मिश्र का दक्षिणा लेते हुए खुश होकर—

क्यूँ जिजमान! मेरी ख़फ़ा होनेकी

तो आदत ही नहीं, जब मेरे चोट लग गई थी ना, तब युंही सा क्रोध आ गया था सो अब वह भी नहीं रहा ; वह देखिये सामने जो एक गुम्बद नजर आता है वह सहस्रकोट चैत्यालय कहलाता है, मगर उसके तो वज्रमयी किवाड़ हैं उनको तो कोई खोल नहीं सकता ।

श्रीपाल हैं ! क्या कहा ? कोई खोल नहीं सकता

पण्डित—हां यही तो मुशकिल है ; ख़ैर जी उसको जाने दीजिये, यहां से थोड़ी दूर के फ़ासिले पर एक और मन्दिर है आप मेरे साथ वहां चलिये और चलकर दर्शन कीजिये ।

श्रीपाल—महाराज मैं आपकी इस महरबानी का बहुत मशकूर हूं ; अब आपके ज़ियादा तकलीफ़ करने की ज़रूरत नहीं, आप को जहां जाना हो जाइये मैं खुद चला जाऊंगा ।

पण्डितजी का जाना, बाद में श्रीपाल का——

गाना

जाऊं जाऊं मैं अभी प्रभु के मन्दिर में,
चलके दर्शन करूं श्री जिनके : जाऊं०

प्रभुके दर्शन जो नित पावें, वो नरकोंमें नहिं जावें
वही नर मोक्ष पदको पावें, प्रभुकी छवि
देखत विशाल,
जिया हो मम निहाल, है तुमपर वारी दुनिया
सारी। जाऊं ०

अंक २ दृश्य ६

सहस्रकोट चैत्यालय

मन्दिर के आगे दो दरवानों का
बैठे दिखाई देना

श्रीपाल—अय दरबानो इस मन्दिरका क्या नाम है?

गुरुदत्त दरबान—महाराज! यह श्री जैन मन्दिर है और इसका सहस्रकोट चैत्यालय नाम है।

श्रीपाल—यह बन्द क्यों है?

दरबान—महाराज इस मन्दिर के वज्रमयी किवाड़ हैं यह किसी से खुलते नहीं इसलिये यह मंदिर बन्द रहता है।

श्रीपाल—अच्छा इनको हम खोलेंगे।

दरबान—महाराज इन वज्रमयी किवाड़ों को खोलने

के लिये बड़े बड़े योद्धा और बलधारी राजकुमार आये मगर ये किसी से न खुल सके : आप भी व्यर्थ परिश्रम न करें अपना रास्ता लें।

गाना

श्रीपाल—

विना खोले किवाड़ों के नहीं मैं य्हां से जाऊंगा.
भुजा अपनी का बल मैं आज य्हां तुमको दिखाऊंगा :
प्रभुका नाम लेकर हाथ जिसदम मैं लगाऊंगा.
संग हो या वज्र तोड़ एक दम मैं बगाऊंगा :
समझते क्या हो कोठी भट है मेरा नाम दुनियामें.
हटो, सारा भ्रम दिल का तुम्हारे मैं मिटाऊंगा।

दरबानों का हट जाना और श्रीपाल का दरवाज़े के पास जाकर सिद्ध प्रभु कहकर किवाड़ों का खोलना. और किवाड़ खुलते हुए एक पदार्थ की आवाज़ का होना और श्रीपाल का मन्दिर जी के अन्दर जाना और भगवान के दर्शन करना और जयमाल पढ़ना।

श्रीपाल—— (मन्दिर में जयमाल पढ़ते हैं)

जय चन्द्रानन चन्द्र छवि तुम चरण.
चतुर चित्त ध्यावत हैं :
कर्म चक्र चकचूर विदा तुम.
जिन मूरत पद पावत हैं :

कलि मल गंजन, मन अलि रंजन,
मुनि जन तुम गुन गावत हैं;
तुम्हरे ज्ञान चन्द्रि का लोकालोक,
माहीं न समावत हैं;
तुम्हरे चन्द्र बरन तन द्युति सों,
कोटिक सूर लजावत हैं;
आत्म ज्योत उद्योत माहिं सब,
ज्ञेय अन्त दिपावत हैं;
बिन इच्छा उपदेश माहिं हित,
अहित जगत दरसावत हैं;
तुम पद तट सुर नर मुनि घट,
चरु विकट विमोह नशावत हैं।

श्रीपालका दर्शन करना और सिपाहियोंकावाहर आपसमें वातचीतकरना

गुरुदत्त—अरे भाई हरदत्त मैंतो यहां ठहरा हूं और तुम जाओ और जाकर श्रीमहाराज से इत्तलाअ करो कि एक परदेसी आया है और उसने वज्रमयी किवाड़ खोलकर दर्शनों में ध्यान लगाया है।

इधर श्रीपाल राजा और महाराज कनककेतु उनके साथ होकर श्री जैन मंदिर पर आना।

राजा कनक केतु हे मित्र धन्य है आपका अवतार: आप ध्यान देकर मेरी बात सुनें: श्री मुनिमहाराज ने मुझसे यह कहा था कि जो पुरुष इस सहस्त्र कोट चैत्यालय के किवाड़ खोलेगा वह तेरी पुत्री रत्न-मंजूषा का वर होगा। सो आप हमारे भाग्य से यहां पधारे हैं और आपने ये वज्रमयी किवाड़ खोले हैं अब आप कृपा करके मेरे साथ चलें और मेरी पुत्री रत्नमंजूषा को अंगीकार करें

श्रीपाल अय महाराज मैं इस योग्य नहीं हूं मैं तो एक राह चलता मुसाफिर हूं।

कनक केतु हे मित्र मुझे श्री मुनि महाराज के वचन प्रमाण हैं वो कदापि झूठ नहीं हो सकते आप मुझपर कृपा करें और मेरी पुत्री को अंगीकार करें

श्रीपाल अच्छा जैसी आपकी खुशी. आपकी खुशी करना हमारा धर्म है, आप यहां के राजा हैं आपकी आज्ञा का पालन करना जरूरी है: परन्तु

मैं यहां ज़ियादा ठहर न सकूंगा, क्योंकि मैं अपने धर्म-पिता धवल सेठ से सिर्फ़ दर्शनके लिये इजाज़त लेकर आया था, मेरी वजह से तमाम जहाज़ समुद्र के किनारे ठैरे हुए हैं, मुझे वहां जल्दी पहुंचना है।

राजा कनक०—अच्छा पुत्र जैसा तुम चाहोगे वैसा ही किया जायगा ; अब तुम मेरे साथ चलो और चलकर मेरी पुत्री को वरो।

श्रीपाल—बहुत अच्छा चलिये।

सबका चले जाना और पर्दे का गिरना।

अंक २ दृश्य ७

जंगल

धवल सेठ श्रीपाल की तलाश में आता है और सामने से श्रीपाल और रैमंजूषा दोनों आते हैं, धवल सेठ श्रीपाल के साथ औरत देखकर चौंक पड़ता है और यह देखने के लिये कि वह औरत कौन है एक तरफ़ छुप जाता है

धवल सेठ—श्रीपाल श्री मन्दिरजी के दर्शन करने गया था न मालूम अब तक क्यों नहीं आया,

भगवत जाने रास्ते में क्या हादसा पेश आया : मगर यह सामने से कौन आता है, ज़ाहिरा तो श्रीपाल नज़र आता है, यह अबला इसके साथ कौन है ज़रा छुपकर देखूं क्या रंग लाता है।

दोहा

श्रीपाल—

हे सुन्दर तुम तातने करी अनोखी बात
तुमसी सुन्दर लाडली दी परदेसी हात

रैन मंजूषा—सुनकर तुम्हरी बातको उपजा खेद अपार
हाय विधना मुझ तातने किया न सोच विचार

धवल सेठ— (छुपा हुआ साइडमें)

ये मीठी बातें तो होगई सीने के पार
हाय दिलको लग गया यह कैसा इश्कका आज़ार

गाना

(नज़र देखो करके ख्याल ॰ [illegible])

श्रीपाल

अय सती तू जरा गुलज़ार दिल खिला,
मनका संदेह मिटा नहीं कर तू फिकर,
मैं हूं राजा महान, चम्पापुर है स्थान;
गति कर्मों की जान जो मैं आया इधर

पिता अरि दमन, किया सुर गत गमन,
चचा वीर दमन रहे चम्पा नगर;
मैना सुन्दर सती महा है गुनवती,
उसका हूं मैं पती, वह है जानो जिगर
कुन्द प्रभा है मात, मैना सुन्दर के साथ,
रहे दिन और रात, प्यारी उज्जैन नगर,
धवल सेठ है एक शाह; मेरा धर्म पिता,
मेरा है यह पता किया तुझसे जिकर;
कोठी भट मेरा नाम, जाने दुनिया तमाम;
यही है अब तो काम; करूं लम्बा सरफ़,
सुना मेरा सब हाल, सती अय बे मिसाल
न कर दिल में ख़ियाल कर महरे नजर;

गाना

रैन मंजूषा —

मेरे धन भाग अय राजा पती तुमसा मिला मुझको
सियाको राम, रुक्मणिको हरी, और तुम मिले मुझको
बिना जाने कहा जो कुछ ख़ता सब माफ़ कर दीजे
हैं राजा आप कोठी भट क्षमा कीजे क्षमा मुझको
नहीं अब स्वर्ग की ख़ाहिश न कुछ धनकी तमन्ना है

हुए बस आपके दर्शन यह है सबमें लिया मुझे, सो
झुकाती हूं मैं सर अपना प्रभुके चार चरणों में
करूं धन्यवाद तन मनसे पति तुमसा मिला मुझको

श्रीपाल—लो प्यारी अब यहां से चलो मेरे धर्म-पिता धवल सेठ मेरा इन्तज़ार कर रहे होंगे. न मालूम दिलमें क्या ख़याल धर रहे होंगे (धवल सेठ का सामनेसे ज़ाहिर होना) आहा पिता जी प्रणाम. आप कहां जाते हैं ?

सेठ—बेटा तुम्हारी ही तलाश को जाता था. तुम्हारे ही देखने को दिल चाहता था. अच्छा हुआ जो जल्द ही मिल गये। मगर हां यह तो बताओ यह अबला कौन तुम्हारे साथ है ? (स्वगत) मालूम होता है यह तो कोई गड़बड़ की बात है।

श्रीपाल—पिता जी मैंने इस अबला के साथ शादी की है।

सेठ—यह क्योंकर ?

श्रीपाल—पिताजी विस्तार पूर्वक तो जहाज़ों पर चलकर सुनाऊंगा परन्तु संक्षेप मे इतना निवेदन है कि मैं इनके पिताकी ज़िद मे हो गया मजबूर.

से पूछने का भी अवसर न मिला यह माफ़ कीजिये मेरा क़सूर ।

सेठ—बेटा तुमने जो कुछ किया यह दुनिया की रस्म है इसमें क्या कुसूर है, व्याह शादी करना तो ज़माने का दस्तूर है ; अब तुम जल्द चलो और चलकर जहाज़ों के लंगर खुलवाओ मैं भी आता हूं ।

श्रीपाल और रैनमंजूषा के चले जानेके बाद ।

आह कैसी प्यारी सूरत है कैसी मोहिनी मूरत है,

गाना

चितवन ने तेरे नज़ारा, दिलपर है आह मारा,
मैं यहां आकर पछताया, दिल नाहक़ युहीं गंवाया,
ज़ुलफ़ों ने है उलझाय, दिल बेढब तरह चुराया,
यह तन मन सारा तुझपर वारा वारा है निसारा ;
चितवन ने०
यह कैसी सूरत प्यारी है, दुनिया से मूरत न्यारी है,
अब दिलमें यही विचारी है वह तनमनधनसे प्यारी है ।
चितवन ने०

आह चाहे अब जान जाये, शान जाये, ईमान जाये इस परी पैकर को दिल से लगाऊंगा, जिस

तहर होगा अपने सीने की दहकती हुई आग को बुझाऊंगा।

विदूषक लीजिये वहां तो जहाज़ चलने को तय्यार हैं और यहां सेठ जी जान से बेज़ार हैं।

सुमतिप्रसाद मंत्री क्यों सेठजी आप पर किसी जिन या प्रेत का होगया है साया, या आपको किसी मोहलिक मरज़ने आ दबाया ? अगर हुक्म हो तो बुलाया जाय जो हकीम हमारे साथ है जहाज़ पर आया।

सेठ शेर

हकीमों से इलाज अबतो हमरा हो नहीं सकता
वोअच्छा कर नहीं सकते मैं अच्छा हो नहीं सकता
जिसे श्रीपाल लाया है उसी ने दिल चुराया है
बिना उसके मिले समझो गुज़ारा हो नहीं सकता
करो तदबीर कुछ ऐसी मिले वो नाज़नीं मुझसे
दबाई लाख तुम करलो सहारा हो नहीं सकता

विदूषक इश्की इन्दरसभा का पहला बाब शुरू होगया।

सुमति० शेर

इलाजे दर्दे दिल हमसे तुम्हारा हो नहीं सकता
जतन लाखों करो मनका विचारा हो नहीं सकता
सती है पाक दामन है वह कोठी भट की रानी है
किसी को उससे मिलनेका भी यारा हो नहीं सकता

सेठ—क्यों नहीं हो सकता, मैं तुझे हुक्म देता हूं कि जिस तरह हो सके उसको मुझसे मिलाने की कोशिश कर, अगर रजामन्दी से क़ाबू में न आये तो जबरदस्ती पकड़ ला।

सुमतिप्रसाद—यह मुझसे हरगिज़ नहीं हो सकता।

सेठ—देखो अगर मेरे हुक्म में ताख़ीर होगी तो तुम्हारी जिन्दगी अख़ीर होगी।

विदूषक—विदूषक अब तूभी भाग, कहीं ऐसा न हो कि यह नजला इधर ढले और सुमतिप्रसाद की बला पड़ जाय तेरे गले।

शेर

सुमतिप्रसाद—

नहीं पर्वा अगर खांडे दुधारे सर पे चल जाएँ
पड़ें भाले जिगरपर, तीर सीने से निकल जाएँ

जगत मुझसे फिरे और आप भी आंखें बदल जायें,
मगर डालूं सती पर हाथ. तो ये हाथ गल जायें,

सेठ—क्यों अय मेरे सब से अधिक खैर ख्वाह व अकल मन्द कुमति प्रसाद मंत्री ! बोल क्या तू भी इस वक्त मेरे काम न आयेगा ?

कुमति प्रसाद—काम, यह आप क्या फ़रमाते हैं।

शेर

हुक्म हो तो जान दे दूं आप के फ़रमान पर
जिसमें ये जज़बा न हो लानत है उस इन्सान पर

हुजूर के काम में अगर यह जान भी आवे तो गुलाम देने से देरी न लावे। आप इस ज़रासे काम के लिये क्यों घबराते हैं. मैं इस के लिये पहले ही एक उम्दा तदबीर सोच चुका हूं।

सेठ—तदबीर ?

कुमति—हां

सेठ—वह क्या ?

कुमति—वह यह कि जब तक आप जहाज़ पर सवार होकर समन्दर के बीच न पहुंच लें तब

तक तो दिल को थाम लें, ज़रा तअम्मुल से काम लें, बस जिस वक्त हमारे जहाज़ आधी रात के समय समन्दर के बीच पहुँचेंगे उस वक्त मैं श्रीपाल को किसी फ़रेब के जाल में फाँस कर समुद्र में गिरा दूंगा और रैनमंजूषा को आप से हमेशा के लिये मिला दूंगा।

सेठ—आहा फिर तो मज़ा ही मज़ा है।

विदूषक—ओ कामदेव के वशीभूत क्या खुश होता है, अब कोई दम में क़ज़ा ही क़ज़ा है।

अंक २ दृश्य ८

समुद्र

जहाज़ों का समुद्र के बीचमें दिखाई देना और श्रीपाल को कुमतिप्रसाद का धोका देकर समुद्रमें गिरा देना

मल्लाह—दौड़ियो, दौड़ियो, कोई बड़ा भारी मगरवा टकरात है, प्रोहनयो डोबत जात है।

श्री पाल — अरे क्या हुआ ? क्या आफत आई ? क्यों दुहाई मचाई है।

कुमतिप्रसाद कँवरजी आप जल्द पधारें. जहाज़ डूबे जाते हैं आप रक्षा करें।

श्रीपाल—आखिर क्या हो गया ?

कुमति०—महाराज हमें कुछ मालूम नहीं ; कोई तूफ़ान है या बलाए जान है।

श्रीपाल—अच्छा धीरज रक्खो हम अभी चढ़कर देखते हैं

श्रीपाल का ऊपर चढ़कर देखना और कुमतिप्रसाद का उसको धक्का देना।

—:—:—

दृश्य १

धवल सेठ का रैनमंजूषा के फिराक में दिखाई देना

शेर

धवल सेठ

रैनमंजूषा की फ़ुरक़त में निकली मेरी जान
है कोई ऐसा यार हमारा चैन मिलावे आन
कहां गया है कहां गया तू सुन कुमतिप्रसाद
भूल गया क्या बात हमारी रहा नहीं क्या ध्यान

विदूषक—

अय मूरख क्या बात विचारी काम नहीं आसान
हो जाओ हुशियार विदूषक भी है पहुंचा आन
जितना है यह डेरा डांडा लश्कर और सामान
इस रस्ते में सब लुट जावे क्यों होते नादान
कहते हैं हम सुनलो भलेकी इसको करके ध्यान
रैनमंजूषा से क्या लोगे खो बैठोगे जान

नसर

सेठ—बस बस विदूषक तू रहने दे अपने इस उपदेश को, मैं दुश्मन जानता हूं ऐसे खैर-अन्देश को

शेर

कर कोई तदबीर ऐसी हमको दे उससे मिला
वर्नः जा यहां से चला नाहक न मेरा दिल जला

कुनतिस्साद का एक दूती को साथ लिये हुए आना।

कुनति सेठजी मैं हाज़िर हूं आप ग़म न कीजिये जल्द इस दूती को रैनमंजूषा के पास रवाना कीजिये। यह अपने काम में फ़र्द कहलाती है सैयाद को एक दम में सैद बनाती है।

विदूषक सेठ जी ! ज़रा होश में आओ; ऐसे खुशामदियों की बातों पर न जाओ, कहीं ऐसा न हो कि दही के खयाल में कपास खा जाओ। रैनमंजूषा महासती है अगर आप उसपर खयाले बद लाएंगे तो लेने के देने पड़जायेंगे।

सेठ—अय विदूषक यह कैसी बे महल कीलोकाल है।

विदूषक सेठ जी ! मुझे आपकी बरबादीका खयाल है।

सेठ हिश्त (विदूषक का चला जाना) अय दूती तू जल्द रैनमंजूषा के पास जा और अपना कमाल दिखा अगर तू मेरी दिली मुराद पूरी कर लायगी तो मुँह मांगा इनाम पायगी।

दूती बहुत अच्छा; मगर हां: एक बात तो सुनो जी, ऐसे मुशकिल काम को जो जाती है वह पहले भी तो कुछ पाती है।

सेठ बोल क्या चाहती है ?

दूती बेटा मेरी तो नई नई मोहरें लेने को तबीयत चाहती है।

सेठ—अच्छा कुमतिप्रसाद इसको इसी वक्त दस मोहर दे दो।

दूती आहाहाहा लीजिये वस मैं अभी जाती हूं और आपका गुंचए दिल खिलाती हूं।
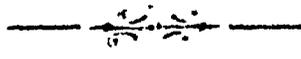
अंक २ दृश्य १०

जंगल

श्रीपाल का एक जंगल में तैरकर निकलकर आना

गाना

श्रीपाल—

तेरा धन्यवाद गाऊँ, सरको झुकाऊँ
अय मेरे भगवान ; तेरा०
तू हितकारी है सुखकारी अय मेरे भगवान।
धोकेसे अफ़सोस गिरा मैं सिंधु ब रंजे कमाल,
तू ने ही ला डाला मोहे सिंधुसे पार निकाल;
रैनमंजूषा रोती है उस जाय धीर बँधाना
अय मेरे भगवान।

सागर में गिर के तैर के आया जो मैं निकल
शत्रु निवारनी व अथा जल तारनी का बल

हाय अफ़सोस मुझे यह क्या मालूम था कि मैं इस तरह सागर में गिरूंगा। मगर इस में किसी का दोष भी क्या है, यह तो सब मेरे ही कर्मों का फल है। ख़ैर। जो कुछ हुआ सब नविश्तए तक़दीर है, मगर हाय रैनमंजूषा के ग़म से दिल मेरा नख़चीर है।

अकेली रैनमंजूषा है दिलको बे क़रारी है,
वफ़ूरे रंज से दिलपर घटा अब ग़मकी तारी है
मिले मुझसे मेरी प्यारी या दम मेरा निकल जाये
यह जीवन ही अकारत है जुदा जब प्राण प्यारी है
निकल जब तैर गरदाबे फ़नासे ज़िन्दा तू आया
तो मिल जायेगी वह भी अय दिला क्यों बे क़रारी है
करें किसका गिला शिकवा करें किसकी शिकायत हम
यह देखा ग़ौरकर हाज़िर करम गत सबने न्यारी है

१ सिपाही-देखो इस राज कन्या ने कैसा पुण्य कमाया है जो इसके वास्ते यह नर समन्दर तैर कर आया है।

शेर

२ सिपाही—

शरीर इस पुरुषका देखो तो सोनासा चमकता है
यह कोई इन्द्र या राजासा मुझको दीख पड़ता है

१ सिपाही—

महा पुण्यवान है मनमथ का इसने रूप धारा है
है सूरत मोहिनी मूरत वदन सांचे में ढाला है

२ सिपाही

भुजाओं की तरफ़ देखो नहीं बलकी कोई सीमा
यह शायद भीम या महावीर ने अवतार धारा है

श्रीपाल का सिपाहियों से मुख़ातिब होना।

शेर

श्रीपाल—

तुम कौन हो और किस लिये इस जा पर आये हो
क्यों इस क़दर घबराये हो मन में लजाये हो
क्या देखते हो मेरी तरफ़ क्या विचार है
भेजा है किसने किसका तुम्हें इन्तज़ार है
ख़ौफ़ो ख़तर का कुछ भी न दिलमें गुमां करो
जो बात साफ़ साफ़ है मुझसे बयां करो

१ सिपाही—महाराज ! हमारा पहरा इस नगर के राजा भूमण्डल ने इस समुद्र के किनारे इसलिये मुकर्रर किया है कि एक दिन उनसे श्रीमुनि महाराज ने कहा था कि जो नर समुद्र तैर कर आवेगा वह तुम्हारी कन्या गुनमाला का वर होगा सो आप पधारे हैं आप महा पुण्य अधिकारी हैं जो आये तैर समन्दर भारी हैं : अब आप हमारे साथ चलिये और इस कुमकुम नगर के महाराज भूमंडल की राजकुमारी गुनमाला को अंगीकार कीजिये ।

श्रीपाल—मैं थक गया हूं गोकि दर्याय अबूर में
पर देखना है कर्म क्या लाएं ज़हूर में

श्रीपाल का इन सिपाहियों के
साथ चला जाना

अंक २ दृश्य ११

बाग

रैनमंजूषा का [illegible]
निन्दा करते हुए दिखाई देना ।

गाना
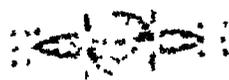
दिये दुःख कर्म ने भारे : पड़े सिन्धु में कन्त हमारे

तुझे कर्म दया नहिं आती, है जान हमारी जाती
चले गमके जिगर पर आरे, पड़े सिन्धु में कंत०
हुआ जगमें आज अंधेरा, सुसराल न पीहर मेरा
हमे छोड़ा किसके सहारे, पड़े सिन्धु में कंत ०
अरे कर्म महा अन्यायी, तुझे जरा दया नहिं आई
ये बदले कबके निकारे; पड़े सिन्धु में कंत हमारे

१ बांदी— दोहा

सुनो महारानी सती तुम हो गुण गम्भीर
होना था सो होगया अब मन राखो धीर

२ बांदी—महारानी सती एक बुढ़िया आपके पास आना चाहती है ।

रैन०—अच्छा आने दो ।

(दूती का आना और—)

गाना

दूती—हे पुत्री इस जगत में होती श्याम सवेर
चाहे जतन सौ कीजिये मरा न आवे फेर
मन लोभी मन लालची मनका यही विचार
जो कोई सुखको तजे दुख पावे वह नार
शील तो जब लग पालिये सर पर है भरतार
तू अब निर अंकुश भई देख करो भरतार

धवल सेठ गुन खान है है वह चतुर सुजान
रूप वन्त धन वन्त है सकल देश प्रधान

रत्न मंजूषा — गाना

ऐसी तुझसी ऐरी गैरी मैंने लाखों देखी भाली
दूती बनकर आने वाली, बातों में फुसलाने वाली
कुलको दाग़ लगाने वाली, नरकों में लेजाने वाली।
मेरे पतिके धर्म पिता कहलाते हैं कहलाते हैं
क्या सुसरा बनके मुझसे रमना चाहते हैं वो
चाहते हैं, जाओ जाओ यहां से जाओ, मत ना
अपना मुंह दिखलाओ, जीभ तुम्हारी यह जल
जाओ, पाप की जिस से बात सिखाओ,

तुम्हरे ऐसे छल, मुझे क्या देती हो जुल,
मेरा क्षत्री का है कुल, मेरा शील है अटल,
अजी जाओ२देखी भालीआई शील डिगाने वाली
ऐसी तुझसी ऐरी गैरी० ॥

[illegible]
[illegible]
([illegible])

गान

चलो मिलकर दिलबर खुदातर हम सब नारियां
हैं सारियां, हम बारियां, यह अजब गुलकारियां,

प्यारियां नारियां सारियां, बनी बांकी छबीली मतवारियां, २ ।
नुकीली अलबेली सहेली दिलदारियां; चलो मिल कर सब कलियां खिलियां बाग़में क्या प्यारी जाई जूई चम्पा चमेली तालकी नारियां. गुलकारी हैं न्यारियां, गावें गावें बुलबुल बाग़में
आओ महारानी सेठानी हमारी ओ प्यारियां
चलो मिलकर०

रैनमंजूषा शेर

तुम्हें गुलशन की सूझे है यहां बेज़ार बैठी हूं,
न छेड़ो तुम मुझे जाओ कि मैं लाचार बैठी हूं,
हँसी का है नहीं मौक़ा नहीं यह छेड़ अच्छी है,
करो मत दिल्लगी मुझसे कि मैं ग़मख़्वार बैठी हूं,
करूंगी आह गर मैं तो लगेगी आग दर्या में,
ये सब जल जायगा टांडा जली अंगार बैठी हूं,

धवल सेठ का आना और असाइड कहना

सेठ—स्वगत दूती के द्वारा तो दाल नहीं गली, उस की चालाकी कुछ न चली। अब मैं स्वयं ही इसे फ़ुसलाता हूं और अपने प्रेम जाल में फंसाता हूं,

धवल सेठ का [illegible] शेर

गाना

धवल सेठ सुन सुन मोहनियां नजरयासोंपै डारनारे विनती सुनले मोरी प्यारी; दिल से हूं मैं तुझपर वारी, कब तक क़ातिल बनकर खञ्जर मारनारे ।

रैन० नाहक मोसे जिद् मतठाने, सोच समझ मन अपने स्याने, जान मैं दे दूंगी धर्म के कारनारे ॥

सेठ

नटखट पनकी मतकर बतियां, झटपट लगजा मोरी छ- आशिक सादिक़ से तूं कर तकरार नारे ॥

शेर

न कर रंजो अलम सब कुछ है यह बेकार जाने दे
नहीं आता कोई मरकर दे छोड़ इन्कार जाने दे
सुनाऊं मैं हाल श्रीपाल का जिस पर तू मरती है
लिया था मोल वो मेरा था ख़िदमत गार जाने दे
तू छोड़ अब रंज की बातें जवानी की हैं ये रातें
तू रानी मैं तेरा राजा न कर तकरार जाने दे
पति मुझको समझ अपना तेरे बिन कल नहीं मुझको
चल अब बस उठके घरमें तू न कर इन्कार जाने दे

रैन०—सता मत बेकसों को तू अरे बदकार जाने दे
न धर सर पोट पापों की अरे बदकार जाने दे
धर्म पितु मेरे बालम का हमारा भी पिता कहिये
न कर बेटी से ये बातें अरे बदकार जाने दे
नरक में मार खावेगा महा दुख वहां पे पावेगा
न होगा वहां कोई ज़ामिन अरे बदकार जाने दे

सेठ—पानसौ प्रोहन भरे हैं मेरे ज़र और मालसे
भोगती सुख क्यों नहीं तू मेरे जाहो मालसे

रैन०—दोस्ती से ज़रकी हो जाता है इन्सां रू सियाह
देख होता है सियह दीवारो दर टकसाल का

सेठ—अय प्यारी बार बार इंकार मत कर, मेरे दिलको बेज़ार न कर, रज़ा मन्दीका जवाव दे इंकार न कर देख वर्नाः—

दुःख पायेगी, मर जायेगी, आख़िर को पछताना होगा।

रैन०—एक दिन है सब को मरना इस दुनियां से जाना होगा।

सेठ अय कमबख्त हट न कर इंकार छोड़
रैन अय बदबख्त ज़िद न कर तकरार छोड़
सेठ मानले
रैन जानले
सेठ मैं कहता हूं तू अपनी हट से मुंह मोड़
रैन और मैं कहती हूं कि तू अपनी बदकारी छोड़
सेठ समझ देख प्यारी तू बस अपने मनमें:
मेरे हाथ से अब रिहाई न होगी।
रैन जो देगा अज़ीयत तो पायेगा ज़िल्लत,
बुराई में हरगिज़ भलाई न होगी.
सेठ लेकिन तू यहतोबता फ़ायदा क्यागेगी नादानी मेंहै
रैन पेश आती है वही जो कुछ कि पेशानी में है
सेठ अयनादान क्यों अपनेहाथसे अपनी जान खोतीहै
रैन मजबूर हूं क्या करूं तकदीर सोती है
सेठ अय प्यारी जब मुसीबत तेरी जानपर आयगी
बता तू किस तरह फिर अपनी इज्जत और
अस्मत बचायगी।
रैन आयें इन्द्र नरेन्द्र जो मिलके सभी:
क्या मजाल जो शील को मेरे हरें

तेरी हस्ती है क्या श्रीपाल सिवा

मेरी नज़रों में कोई बशर ही नहीं

सेठ मैं अभी तुझको मना लूंगा पकड़ कर

रैन मैं अभी मरजाऊंगी दर्या में पड़कर

सेठ देखूं तू अपना कहां तक शील बचायगी

रैन हे प्रभु ! तुमही हो अन्तर्यामी; मेरी लाज को बचाना।

सब देवी ख़बरदार ओ बदकार सतीको हाथ न लगाना

धवल सेठ ने रैनमंजूषा का हाथ पकड़नेको अपना हाथ बढ़ाना चन्द देवोंका बरछे लिये हुये निकलआना और देवोंका चारों तरफ से आकर धवल सेठको हरना

ड्राप

अंक ३ दृश्य १

जंगल

धवल सेठ का कुमति प्रसाद के पास
अपने जहाज़ों पर घबराये हुए आना।

सेठ—ग़ज़ब हो गया, सितम हो गया, मेरे तो पाऊँ लड़खड़ाते हैं होश उड़े जाते हैं।

कुमति—क्यों क्या हुआ सेठ जी यह आप क्या फ़रमाते हैं।

सेठ— सुनो मंत्री ध्यान करके ज़रा
यकायक यह क्या माजरा हो गया
श्रीपाल डाला समन्दर के बीच
न मालूम कैसे रिहा हो गया

कुमति—रिहा हो गया!

सेठ—मैंने अभी उसे शाही ठाठ के साथ बाग़ की तरफ़ जाते देखा है।

कुमति—मैंने भी यहां के आदमियों से सुना है कि श्रीपाल यहां समुद्र तैर कर आया है और उसको राजा भूमंडल ने अपना दामाद बनाया है

सेठ—दामाद बनाया है! बस फिर तो ग़ज़ब ही

हो गया, जल्द बताओ फिर अब क्या किया जावे ?

सुमति—मेरा तो यह विचार है कि आप श्रीपाल के पास जाइये और उस से अपने अपराधों की क्षमा कराइये।

सेठ—हैं ! तो क्या कहा ! क्या मैं श्रीपालके पास जाऊँ और उस से क्षमा चाहूं। क्या इसके सिवा और कुछ चारा ही नहीं ?

सुमति—जी नहीं।

सेठ—क्यों कुमति प्रसाद क्या तुम्हें भी सुमति प्रसाद की राय से इत्तफ़ाक़ है ?

कुमति—नहीं जनाब हरगिज़ नहीं

सुमति प्रसाद नादां है भला मंत्र को क्या जाने
सर अपना बैरी के आगे झुकाना है नहीं अच्छा
जो अपराधी हो तुम उसके भला बख़्शेगा क्या तुमको
ख़याल ऐसा कभी दिल में ज़रा लाना नहीं अच्छा,
करो तदबीर कुछ ऐसी वह मारा जाय जल्दी से
निशां दुश्मन का बाक़ी कोई रहजाना नहीं अच्छा
यह काम होजायगा भांडों से जल्दी गर बुलालीजे
यह है तदबीर लासानी शुबह लाना नहीं अच्छा।

सेठ हां तो क्या तुम इस काम को अंजाम दे सकते हो

कुमति मैं इन भांडों को ऐसी तरकीब बताऊंगा कि आपका मक़सद बर लाऊंगा

सेठ शाबाश, अय मेरे बहादुर मंत्री शाबाश: मुझे तेरी राये बहुत पसंद है। ले यह ले मैं तुझको दसहज़ार रुपया इनाम देता हूं।

कुमति अयं हयं हयं: इसकी क्या ज़रूरत है।

कुमति प्रकार का [illegible] और दोनों का [illegible]

गाना।

सेठ मंत्री आला सबसे निराला हिकमत वाला फ़ित-रत वाला कर काम पर काम आला जा जा

कुमति सर तन से उसका जाये

सेठ जब दिलबर मुझको पाये

कुमति आहा हा हा हा, हा हा हा

सेठ जाय जानसे वो शानसे तू फ़ितरत वाला कर काम आला: मंत्री आला०

अंक ३ दृश्य २

दरबार

राजा भूमंडल का मय श्रीपाल व दरबारियों के दरबार में बैठे हुए नज़र आना, सहेलियों का नाचना गाना।

छुम छुम छुम छुम, छुम छुम छुम छुम
नाचत गत अत बाजत ताल
रुम झुम घुम घुम घुंगरु करत हैं
करत हैं ता तत थेई तत सुन्दर चाल
नैन तुम्हारे हैं मतवारे रैन से कारे अय रानी
सैन के भाले खूब निकाले ढंग निराले लासानी
तक त्रांग तक तक तक तक धिद किट धिड
धिद किट, ध्लांग तक थुंकिट धिगत तक तक
तक तक ध्लांग ध्लांग तक गिद गिन थेई।
छुम छुम०

चोबदार—श्री महाराज! चन्द भांड शादी की खुशी में मुजरे के लिये दरबार में हाज़िर होना चाहते हैं।

राजा—अच्छा आने दो।

भांड—महाराज के जय जय कार हों.... (घोड़ा दौड़ा कर)

कहते हैं कि भांड आये या उपदेशी, वलायती आये या स्वदेशी, चन्दन भांड महाराज के दरबार में ऐसे आये जैसे हितोपदेशी।

२ भांड और सुनिये कुछ जैन धर्म की तारीफ है, कहते हैं कि जीव को बचाय, रात को न खाय, पर त्रिया को त्यागे, मदिरा से भागे; भक्ष्य को खाय, अभक्ष्य को त्यागे; इतनी बातोंसे अपने को बचाय तो जैनी कहलाय।

३ भांड और कहा है कि क्रोध से बचे, मानको तजे, लोभ को छोड़, माया से मुंह को मोड़, कुगुरु के पास न जाय, कुदेवको हरगिज़ न ध्याय, जब इतनी बातों से दिल को बचाय तो जैनी कहलाय

राजा अय खुशइल्हानो! गाओ कोई उमदा तराना सुनाओ।

भांडों का गाना और नाचने के बाद

कँवर श्रीपाल हम इन भांडों के गाने से बहुत खुश हुए, हमारी खुशी यह है कि खज़ाने से इन को चाहे सो अपने हाथ से इनाम दो।

श्रीपाल जो आज्ञा

श्रीपालका उठना और भांडोंका उसे घेर लेना।

१ भांड अरे मेरी बो बो के जाये ! तें कहां ?

२ भांड अरे मेरे बीरन ! मन्ने भी भूल गया

३ भांड अरे मेरी तमाम उम्र की कमाई ! तें कहां चला गया था

राजा ओ गुस्ताख़ भांडों यह क्या माजरा है ? जल्द मुझसे साफ़ साफ़ बयानकरो वर्नः सूलीपर चढ़ाये जाओगे ।

गाना

सब भांड—सुनो इस पूत के लच्छन, अजी इस पूत
के लच्छन सुनो०

मेरे दो लड़के भये दोनों पूत कपूत,
गोबर्धन और श्रीपाल सो बारह मुट्ठी ऊत;
सुनो इस पूतके लच्छन०
एक दिन आपस में लड़े दोनों ऐसे नीच,
श्रीपाल गुस्सा किया गिरा समन्दर बीच ;
सुनो इस पूत के०
गोबर्धन तो मरगया मरा हमारा कन्त,
मैं दुखियारी रह गई कहा कहूं बिरतन्त;
सुनो इस पूत के०

धन अवसर और धन घड़ी धन तेरा दरबार,
सूरत बेटे की लखी वारूं सब घरबार :
सुनो इस पूत के०
ना धन दौलत चाहिये ना चहिये भंडार,
बेटा हमारा दीजिये पावे लाख हज़ार :
सुनो इस पूत के०

राजा— क्यों अय परदेशी ! यह क्या बात है? ये भांड क्या कहते हैं ?

ठीक हाल कुलका तुम अपने बयां करो
जो माजरा है साफ़ वो मुझपर अयां करो

श्रीपाल मुनों तुम गौर से राजा कर्म का ढंग न्यारा है
कहीं रोना खुशी का और कहीं गम का नकारा है
धरे रहते हैं सब जरबल्ल किजब तकदीर फिरती है
अटल है कर्म की रेखा यही निश्चय हमारा है
न ब्रह्म हूं न क्षत्री हूं न साहूकार राजा हूं
समझ लो वंश भांडों का बस राजा हमारा है

राजा ओ श्रीपाल तू बड़ा दगाबाज़ा है. मेरी राज कन्या को धोके से ब्याहा. मेरी इज्ज़त को ख़ाक

में मिलाया, मुनासिब है कि तुझको सूली की सजा दी जाय, हरगिज़ तेरी मुआफी न की जाय अय दरबान जा और फौरन जल्लाद को बुलाला

मंत्री श्री महाराज यह मुआमिला बहुत नाजुक है इस पर जरा ग़ौर कीजिये कुछ सोच समझ कर हुक्म दीजिये।

राज बस अय मंत्री ! जब श्रीपाल खुद इक़रार करता है तो तू फिर क्यों इस मुआमिले में इसरार करता है यह इसी क़ाबिल है कि इसको सूली पर चढ़ाया जाय ताकि हर शख्स इसको देखकर इबरत पाय। देख अय जल्लाद इस पापी श्रीपाल को मेरे सामने से ले जाओ और सूलीपर चढ़ाओ।

गाना

पायेगा इसी आन जान सजा, २, ले जल्दी इस को जा ये पावे ना कुछ आबो दाना, खाना दाना ना देना ना देना तरसाना तरसान जा। पायेगा०

अंक ३ दृश्य ३

महल

गुनमाला का सहेलियों के साथ नज़र आना

गाना

गुन०—

समझाती हूं बहुतेरा, सखीरी जिया घबरावे मेरा
प्राणपति गये कबके सखीरी आये नहीं हुई शाम
उनके दरस बिन अब मोरी आली निकसत मोरे प्रान
सखीरी जिया घबरावे०

केतकी—बाईजी न मालूम आज क्या बात है, तबीअत घबराई जाती है, आंखों के आगे कुछ अंधेरी सी छाई जाती है ; मगर हां ज़रा चपला की तो ख़बर लाओ आज अभी तक नहीं आई है न मालूम इतनी देर कहां लगाई है ।

केतकी—हाज़िरी अभी जाती हूं, ख़बर तो क्या बल्कि चपला ही को बुला लाती हूं ।

चम्पा—अजी आप बुलाने किसे जाती हैं देखिये वह तो सामने से ख़ुद ही चली आती है ।

चपला—ग़ज़ब है, सितम है, तबाही है, तबाही है ।

गुनमाला—क्यों क्या हुआ ? क्यों चीख़ती है क्या आफ़त आई है ?

चपला—बाई जी कुछ न पूछो जल्द कोई तदबीर निकालो अपने प्राणपति को बचा लो ।

गुनमाला हयं ! क्या कहा, प्राणपति को बचालो ? चपला ज़रा होशमें आओ मुंह संभालकर बात निकालो

चपला बाई जी मेरी बात निश्चय मानो, झूट न जानो, आपके पिताजी ने आपके पति श्रीपाल को सूली का हुक्म देदिया ।

गुनमाला मेरे पिताजी ने हाय !

यकायक गुनमालाका बे होश- हो जाना दो सहेलियोंका उसको संभालना गुनमालाका फिर होश में आकर कहना ।

क्या कहा, सूली का हुक्म दियाहै ? आखिर किस ख़ता पर ?

चपला ख़ता की तो दासी को मालूम नहीं सिर्फ़ इतना सुना है कि श्रीपाल भांडों की औलाद साबित हुए इसे श्रीपाल ने भी मानलिया तो महाराज ने गुस्सा होकर सूली का हुक्म दिया ।

गुनमाला उफ़ !

गाना

अरी बांदी सुनाई क्या खबर तूने यह आकरके,
मुझे बे मौत मारा तूने ये बातें सुनाकरके,
मेरा बालम है कोठी भट मुकट धारी राज बंशी
हो कैसे बंश भांडों का तू क्या बकती है आकरके,
नहीं ताकत किसी की है उन्हें सूली चढ़ाने की,
यक़ीं आता नहीं देखूंगी खुद मौक़े पे जाकर के
तू चल अब साथ झूटी बात गर तेरी मैं पाऊंगी
तो मरवा दूंगी तेरी खाल में मैं भुस भराकरके

[illegible]

अंक ३ दृश्य ४

बाज़ार

श्रीपालका सवारी और बांदियोंके साथ आना, गुनमाला और महलदार भी दूसरी तरफ़ से आना।

गुनमाला प्राणनाथ ! हाय आज यह मैं क्या विचित्र चमत्कार देखरही हूं। आपतो राजबंशी मुकुटधारी हैं आप पर भांडों ने यह कैसे मिथ्यारोप किया ?

श्रीपाल प्रिये भांडों ने मिथ्यारोप नहीं किया. जो कुछ

कर्मों में था वही हुआ इसमें किसी का क्या दोष है बस समझ लो कि भांडों का वंश हमारा है चूंकि तुम्हारे पिता के दरबार में हमें भांडों ने अपना बेटा, भाई, भतीजा कहकर पुकारा है।

गुनमाला प्राणनाथ ? दासी से ऐसा क्या अपराध हुआ है जो दिल की बात छुपाते हो, शोक के समय भी कठोरता से दासी को हंसी में उड़ाते हो।

जो हो तुम बदगुमां मुझसे तो स्वामी जान देदूंगी
बताओगे न हाल अपना तो अपने प्रान दे दूंगी

श्रीपाल—प्रिये ! मैं तुझसे कठोरता से हँसी नहीं करता हूं बल्कि तू निश्चय जान कि तेरे पति को सूली चढ़ाने की किसी को भी यहां सामर्थ्य नहीं, चिन्ता मत कर अपना शोक दूर कर और देख अभी कर्म क्या क्या दिखाते हैं।

गुनमाला—प्राणनाथ ! आपने जो कहा सत्य है, मुझे इसका पूरा विश्वास है कि आप के वचन कदापि झूठ नहीं हो सकते; परन्तु हे स्वामी मैं क्या करूं आपको इस दशा में देखकर मेरा हृदय फटा जाता है; कर्मों का लिखा तो मैं ने

बहुत कुछ देख लिया अब इससे अधिक मुझसे और कुछ भी नहीं देखा जाता है; कृपा करके अब आप यह बता दीजिये कि भांडोंने जो आकर यह मिथ्यारोप किया है इसका क्या कारण है ?

श्रीपाल— प्रिये अगर तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो समुद्र के किनारे जाओ वहां जो जहाज़ ठैरे हैं उनपर तुम्हें सुन्दरी रैनमंजूषा मिलेगी उससे सब मेरा वृत्तान्त पूछ लेना वह तुम्हें सब बता देगी।

गाना

गुनमाला—

वेगी आऊँ रे चांडरवा इतने ठैरनारे
जबलग फिरकर मैं ना आऊँ, आकर हुक्म न तोको
सुनाऊं तब लग नाहीं सर पर खंजर फेरना रे । वेगी०

अंक ३ दृश्य ५

जंगल

गुनमाला और चपला का भेस बदल कर आना

चपला— देखो प्यारी राजकुमारी शगुन तो आज अच्छे नज़र आते हैं, बाएं हाथपर सोनचिड़ी बोल रही है और दाएं हाथ पर............

गुन०— ठैरो देखो वो सामने से कौन आता है।

चपला— आइये तो ज़रा छुपकर देखें।

दोनों का छुपना, धवल सेठका आना और रेनमंजूषा के इश्क में गाना

गाना

सेठ—

तुम्हारी यादमें जानां हमारा दम निकलता है
न शबको नींद आती है न दिनको दिल बहलता है
नहीं पर्वा सताओ, दिल जलाओ, जान तक लेलो
जो मेरे ही सताने से तुम्हारा दिल बहलता है
बहुत कुछ रोकता हूं दिलको उलफ़त से हसीनों की
यह सब सच है मेरी जां, पर फँसादिल कब निकलता है
जफ़ाएं लाख तुम इस पर करो सहने को हाज़िर है
यह आशिक़ तेरा दीवाना है कब टाले से टलता है

कुमतिप्रसाद का आना।

कुमति चल गया चल गया, मेरे फ़रेब का जादू चल गया।

सेठ क्यों कुमति क्या है ?

कुमति कामयाबी

सब ज्ञान गर्व जान के जाने पे गया है
दानाहै फंसा जाल में दाने पे गया है

क्या२ चली हैं चाल तुम्हें क्या२ बताएं
जो तीर चलाया है निशाने पे गया है

सेठ यानी ?

कुमति यानी यह कि यहां का राजा भूमंडल मेरी फरेबाना कारवाई को कुछ न समझा। श्रीपाल को हमने अपने जहाजों पर से समुद्र में धकेल दिया और वह फिर भी बच निकला तो क्या हुआ, भांडों को पढ़ाये हुए मंत्रने पूरा काम किया कि राजाने उसे सच मुच भांडोंकी औलाद सम-झकर सूली का हुकम दे दिया।

गुनमाला (छुपी हुई) अच्छा यह बात है

सेठ अच्छा अब रैनमंजूषा का क्या इरादा है ?

कुमति हुजूर मैं उसके पास होता हुआ आया हूं वह तो खुदकुशी करने पर अमादा है

सेठ पर अब क्या किया जायगा

कुमति घबराइये नहीं इसको भी कोई नया जुल दिया जायगा

सेठ हां

कुमति जी

सेठ अच्छा

कुमति चलो

दोनोंका जाना गुनमाला और
चपलाका ज़ाहिर होना

गुनमाला

कर्म फल देंगे तुझे जो कर रहा है पाप तू
खोदले ज़ालिम गढ़ा इसमें गिरेगा आप तू

अंक ३ दृश्य ६

जहाज़

रैनमंजूषा का श्रीपाल के वियोग में
ग़मगीन दिखाई देना

गाना

रैनमंजूषा—

मेरी क़िस्मत मुझे तूने यह क्या आफ़त दिखाई है
जिगर टुकड़े हुआ मेरा लबों पर जान आई है
पती श्रीपालका मुझको पता कुछ भी नहीं मिलता
गिरे हैं जबसे सागर में ख़बर कुछ भी न पाई है
फँसी हूं आके फन्दे में यहां पर धवल साहू के
नहीं मालूम ज़ालिम के बदी क्या दिल में आई है

अगर दर्शन नहीं होंगे पती श्रीपाल के मुझ को
मरूंगी डूब कर मैं भी यही दिल में समाई है

गुनमाला और चपला का आना।

गुनमाला—हाय सती रैनमंजूषा, प्यारी बहन रैन-मंजूषा तुझे कहां ढूंढूं किधर जाऊं, तमाम समुद्र का किनारा देखा मगर कहीं पता न मिला।

मिलने की तेरे अब नहीं कुछ बाकी आस है
रुखसत हुआ है सब्र और दिल बद हवास है
अय नाथ बेड़ा पार कर तुझ से ही आस है
हामी तू बे कसों का तेरी ज़ात खास है

रैनमंजूषा—जिसको तू ढूंडता है वह तेरे ही पास है
हे भाई कौन है तू और क्यों दिल हिरास है

गुनमाला—हयँ! यह आवाज़ किधर से आती है।

चपला—घबराओ नहीं ज़रा हिम्मत से काम लो यह दासी अभी दरयाफ्त करके बताती है।

चपला का रैनमंजूषा से पूछना।

क्यों जी क्या आपके जहाज़ पर कोई रैनमंजूषा नाम की सुन्दरी भी है?

रैनमंजूषा—हां है तो सही मगर तुम्हें उसकी क्यों तलाश है।

चपला—हमें उनकी इसलिये तलाश है कि उनके पति श्रीपाल इत्तफ़ाक़िया अपने जहाज़ से समुद्र में गिर पड़े थे सो वो तैरते हुए इस देश में आ निकले हैं।

रैन०— हां हां वो मैं ही हूं, बताओ बताओ मेरे प्राणपति कहां हैं ? जल्दी बताओ

चपला—सब कुछ बताया जाय जो ज़रा नज़दीक आओ।

रैन०— लो अब तो मैं तुम्हारे बिलकुल क़रीब आ गई अबतो बताओ।

चपला—अच्छा तो हमारे साथ चलो तुम्हें रास्ते में सब हाल बता देंगे और तुम्हारे प्राणपति के पास तुम्हें पहुंचा देंगें।

रैन०— मगर तुम कौन हो ?

गुनमाला बहन इस क़दर न घबराओ, हमारे ज़ाहिरी लिबास पर न जाओ जो तुम हो वही हम हैं, जो हम हैं वही तुम हो—क्या तुम हो जुदा हम से या हमको जुदा जाना।

चपला और गुनमालाका अपना
मरदाना लिबास उतार डालना।

रैन० — हयँ यह क्या ! तुम कौन हो ?

गुनमाला— मेरा नाम गुनमाला है । जो यहां की राजकुमारी हूं मगर अब दासी तुम्हारी हूं

रैन— बस तो अब मुझको यक़ीन है यक़ीन है

चपला अगर यक़ीन है तो यह काला चोग़ा पहिन कर यहां से जल्द चली चलो, कहीं ऐसा न हो कि कोई दुश्मन देख पाय और बना बनाया काम सब बिगड़ जाय ।

[illegible]

——:o:——

अंक २ दृश्य ७

सूरत

श्रीपाल का मुसाफ़िर सूरत बनकर
और राजा गुनसेन का अप-
ने मंत्री और कोतवाल
वग़ैरा के साथ आना ।

श्रीपाल—

दो दिनकी है राहत मंजिल दो दिनका मुसाफ़िरख़ाना है
दो दिनके हैं घर दर सारे दो दिनका काशाना है
रहे मुसाफ़िर कमरको बांधे आज आया कल जाना है
दुनिया जिसको कहते हैं यह एक मुसाफ़िरख़ाना है

राजा क्यों अय जल्लाद अब क्या इन्तज़ार है ?

जल्लाद कुछ नहीं बंदा हुज़ूर के हुकम का तलब गार है ।

राजा बोल अय श्रीपाल अब तू अलावा ज़िन्दगी के और किसी चीज़ का ख़्वास्तगार है ?

श्रीपाल किसी चीज़ का नहीं सिर्फ़ मौत का इन्तज़ार है

राजा जल्लाद ! कर वार

जल्लाद का तामील करनेको तैयार होना उसी वक्त गुनमालाआदिका आकरजल्लाद को रोकना ।

गुनमाला ख़बरदार

राजा तू कौन है इसको रोकने वाला

गुनमाला गुमराहों को रास्ता बताने वाला और बे गुनाहों की जान बचाने वाला

राजा यानी

गुन आपकी बेटी गुनमाला

राजा क्यों अय लड़की तू यहां किसलिये आई है? और यह शख़्श तेरे साथ कौन है? क्या श्रीपाल के लिये कोई सफ़ाई का गवाह लाई है ?

गुनमाला— जी हां यह शख़्स कहता है कि श्रीपाल बे गुनाह है, जो हुआ है यह सब धवल सेठ की फ़र्ज़ी कार्रवाई है

राजा— क्यों अय शख़्स क्या तू इस बात का सबूत दे सकता है कि यह सब धवल सेठ की फ़र्ज़ी कार्रवाई है।

रैनमंजूषा— जी हां, अगर धवल सेठ को मय उसके हमराहियों के, और वो भांड जिन्हों ने निर्दोष श्रीपाल को अपना बेटा बनाया है अगर उनको बुलाया जाय तो श्रीपाल की बे गुनाही का हाल आप को काफ़ी तौर से मालूम हो जाय।

राजा— मगर देखो यह ख़याल रहे अगर इस में ज़रा भी फ़र्क़ पाया जायगा तो श्रीपाल के साथ तू भी सूली पर चढ़ाया जायगा।

रैनमंजूषा— जी हां, अगर मेरे कहने में ज़रा भी फ़र्क़ निकल आवे तो फ़ौरन सर उड़ा दिया जाय।

राजा— अच्छा सेनापति साहब तुम फ़ौरन जाओ और धवल सेठ को मय उसके हमराहियों के

गिरिफ़्तार कर लाओ, और कोतवाल साहब तुम जाकर उन बदकार भांडों की मुश्कें बांध लाओ और मंत्री साहब तुम मुजरिम श्रीपाल को मए इन गवाहोंको लेकर दरबार में आओ।
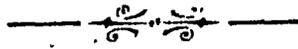
अंक ३ दृश्य ८

बाज़ार

एक भांडके लड़के का गाते हुए दिखाई देना
और उसके बाप का आना

गाना

लड़का फुलझड़ी——
कैसी करूं मोरा जिया रिझाये, पीतम मोरे सोतनिया भ्रमाये। नहीं आये नहीं आये, रहो नहीं जाये, मोहे विरहा सताये। कैसे करूं०
रोवत धोवत है रैन जात, कोमल २ गात जरो जात सजनी, जाओ कोई जाओ कोई सुघर को जाय लाओ लाओ न मनाय। कैसे करूं०

चन्दन भांड— कहो बेटा फुलझड़ी यहां अकेले खड़े खड़े क्या बड़बड़ाते हो?

फुलमती- अजी क्या ख़ाक बड़बड़ाता हूं, एक काफ़ी की ठुमरी को ताल में बिठाता हूं, कमबख़्त बैठती ही नहीं, ज़रा आप ही बिठवा दीजिये।

चन्दन—बस बेटा अब तालसुर को आन लगा. तुझे याद होगा कल मैं ने एक सेठ के कहने से यहां के राजा को बहुत बड़ा जुल दिया है. उस काम के इनाम में सेठजी ने मुझे बहुतसा रुपया दिया है; बस अब कल ही से तेरी बागडोर स्कूल की तरफ़ मोड़ता हूं और मैं भी आज ही से इस पेशे को छोड़ता हूं, तुझको बी० ए० एम० ए० तक पढ़ाकर वकील या बेरिस्टर बनाऊंगा. अगर क़िस्मत ने यारी दी तो थोड़े अर्से में मैं भी रायबहादुर बन जाऊंगा।

[पर्दे में से आवाज़]

अचपल भांड—अरे ओ भाई हमारी तरफ़ से तुम रायबहादुर बनो या ख़ान बहादुर मगर पहले जो सेठजी से रक़म लाये हो उसमें से हमारा हिस्सा हमें दिलवाओ।

चन्दन अरे जाओ जाओ ज़रा ठंडी ठंडी हवा खाओ

अचपल — तो क्या तुम इनाम नहीं लाये ? क्या हमारा हिस्सा हमें नहीं दोगे ?

चन्दन- अबे वाह बे चड्डागुलखैरू ! कैसा हिस्सा और कहां का इनाम, कहीं से भंग पी आया है या चरस का दम लगाया है मैं क़सम खाकर कहता हूं कि किस मरदूद ने अभी तक अपने हिसाब एक पैसा भी पाया है।

अचपल तो बेटा यह सरबन्द क्या तुम्हारे बाप ने बनवाया है

चन्दन अजब बेवकूफ़ है, यह तो मेरे दादा के वक्त का है कलही तो टोडल रँगरेजसे रँगवाया है

अचपल देखो कमबख्तने क्या नया फ़िक़रा बनाया है यारो ! कहते नहीं तुम्हारी समझ में भी कुछ आया है।

सबभांड भाई अगर हम से पूछते हो तो अपने हिसाब किसी ऐसे तैसे ही को इसकी बातका यक़ीन आया है। यह कमबख्त तो हम सब से

बेईमानी करना चाहता है सारी ही रकमको हज़्म किये जाता है ।

चन्दन — चन्दन अब ज़रा दमसे काम ले । .... ओ नालायको खुद ईमानदार बनते हो और मुझे बेईमान बनाते हो मालूम होता है कि तुम अपनी ज़िन्दगी से छुटकारा चाहते हो (तलवार निकालकर) है कोई ऐसा जो आकर संभाले तुम्हारी लाशों को

कोतवाल — खबरदार जाने न पाएं, पकड़ लो इन बदमआशों को ।

(कोतवाल का सब सिपाहियों
गिरफ्तार करके ले जाना)

अंक ३ दृश्य ९

दरबार

(राजा भूमंडल का मय मंत्री, गुलबदन, [illegible] [illegible]
और दरबारियों के दरबार में बैठे दिखाई देना)

कोतवाल — श्री महाराज यह भांड अपने इन साथियों पर तलवार का हमला करते हुए गिरफ्तार किये गये हैं जो कि हाज़िरे दरबार हैं ।

सेनापति हजूर बमूजिब हुक्म यह सेठ मए अपने हमराहियों के हाज़िरे दरबार है ।

सेठ महाराज ने कैसे याद फ़रमाया है ?

विदूषक जनाब आपका काल आप को यहां खींच लाया है ।

राजा तुमको इसलिये बुलवाया है कि यह शख्स कहता है कि तुम्हारी श्रीपाल से कोई दुशमनाई है, जिस वजह से तुमने भांडों को दरबार में भेज कर श्रीपाल पर झूटी तोहमत लगाई है ।

सेठ यह बिलकुल झूट है बोहतान है इसके पास क्या सुबूत है कि यह मेरी ही कार्रवाई है ।

रैनमंजूषा जी हां लीजिये जो मेरे पास सुबूत है वह पेश करता हूं

ये भांड बताते हैं जिन्हें अपना रिश्तेदार हैं
ये नगर चम्पापुर के कोठीभट कुमार हैं
एक कनककेतु राजा हंस दीप का भारी
श्रीपाल को दी उसने अपनी राजकुमारी
श्रीपाल और वो लेके चले सेठ सहारा
पापी ने देख उसे पाप मन में विचारा

उसकी नार को फंदेमें फंसाने के लिये जाल फैलाया. श्रीपाल को धोके से समुद्र में गिराया, पर देवताओं ने उस सती का शील बचाया, उन्हीं का करना है जो उसे आज यहां लाया. यस तान जान आपके दर्बार में आई, गर हुक्म होवे आपका तो जावे बुलाई

राजा क्यों अय धवल सेठ यह शख्स क्या कहता है

सेठ ओह! इसके बकने से क्या होता है यह तो कोई कितावि (?) सा किस्सा मालूम होता है, क़ाबिले सुबूत कोई बात नहीं: और अव्वल तो यह कि यह कौन बला है और श्रीपाल कौन है मैं जानता ही नहीं दोनों मेंसे किसी को पहचानता ही नहीं।

रैन० क्या आप किसी को भी नहीं जानते ? ज़रा भी नहीं पहचानते ?

रैनमंजूषा का सामने [illegible]

सेठ कौन रैनमंजूषा ! यह यहां कैसे आई ! बस अब तो तबाही है तबाही ।

राजा हूयें यह क्या मर्द के भेस में औरत ! जल्दी जल्द बता तू कौन है ?

रैन मंजूषा— है कनककेतु राजा हंस दीप का भारी,
मैं उसकी सुताहूं और श्रीपाल की नारी

राजा— क्यों अय पापी धवल ! सुना यह लड़की क्या कहती है ।

सेठ— यह जो कहती है सब सच है नहीं एक बात भी फरजी; मैं अपराधी हूं पापी हूं सजा दीजिये जो कुछ हो आपकी मरज़ी हाय सुमति की बात न मानी कुमति के फेर में आया; किये जैसे कर्म मैंने नतीजा उनका यह पाया ।

राजा— ग़जब है सितम है
मरे बे गुनाह यों मेरे राज में
सती पाय दुख यों मेरे राज में
है शाबाश पुत्री महागुन भरी
समझ, सब गयी अब मुसीबत तेरी

(श्रीपालसे)—सुन अय कंवर कोठी भट नेकनाम
खतावार हूं आपका ला कलाम
बनावट का था सारा यह माजरा
बड़ा मुझको भांडों ने धोका दिया

जो कुछ बात थी आज सब खुल गई
जो थी असलियत मुझको अब मिल गई

श्रीपाल—
तुम्हारी क्या खता इसमें मेरी किसमत की खूबी है
जो तुमसा मेहरबां हो बदगुमां किसमतकी खूबी है
करूं शिकवा शिकायत है कहां मक़दूर यह मुझको
मैं खुश हूं अब नहीं कोई शिकायत आपसे —

राजा—हे कँवर श्रीपाल! धन्य है नहीं हूं कि मेरी और परिवार (मंत्री से) क्यों अब जिन्दगी वगैरा धवल ने कुछ कम जुल्म हीं है। अय नफ़्से सज़ाये मौत न दी जाय ? त, अय क़ल्बे नाकारा

मंत्री—महाराजाधिराज वा तुम्हारी ही सोहवत दुरुस्त और वजा है दरअस मेरे खून पर लपलपा पुर ख़ता है इसको ज़रूर हम नशीनी का असर है हर फर्द बशर इसकी हाल तों के बादल साथ लिये

राजा—अय पापी धवहै।
पुत्री रैनमंजूषा के र बगरीबां ऐसा
श्रीपाल को धोकेसे कोई पशेमां ऐसा
सरे दरबार धोका दि——

में शर्मिन्दा किया इसलिये तुझे तेरे पापों के बदले सज़ाये मौत दी जाती है और तेरे तमाम साथियों को ताज़ीस्त क़ैद की जाती है (कोतवाल से) और कोतवाल तुम इन बदकिर्दार भांडों को लेजाकर तीरों से हलाक करो, बदमआशों से मेरे राज को पाक करो (श्रीपाल से) अय कँवर श्रीपाल अब मेरी ...हिश यह है कि तुम्हारे दिल में मेरी तरफ़ दीजिये जा... हो उसको निकालो और यह राज सुमति की बात ने सँभालो।

किये जैसे कर्म मैंने ...के हुक्म से कुछ नहीं इंकार

राजा— ग़जब है सितम यहां से जाने का मेरा विचार
मरे बे गुनाह ...प मंजूर करें तो आपसे एक
सती पाय दु
है शाबाश पुत्रा ?
समझ, सब गय सेठ मेरे धर्म पिता को

(श्रीपालसे)—सुन अय कंवर कोदिया है वह मनसूख
खतावार हूं आपक्षयेंको भी मये भांडों
बनावट का था साहों ने मेरे साथ कोई
बड़ा मुझको भांडोंकुछ भी दुख सुख

दिया है वह मेरे कर्मों ही ने दिया है, फ़रमाइये अगर मैं सागर में न गिराया जाता तो यहां तक क्योंकर आता गुनमाला को कैसे ब्याहता ।

राजा अच्छा पुत्र अगर तुम्हारी यही खुशी है तो मैं धवल सेठ की तरफ़ से अपना दिल साफ़ करता हूं और इसके हमराहियों को भी मए भांडों के मुआफ़ करता हूं ।

सेठ नहीं नहीं मैं अब इस क़ाबिल नहीं हूं कि मेरी जां बख़्शी की जाय, मुझे अब जिन्दगी वग़ैरा किसी चीज़ की ख़्वाहिश नहीं है । अय नफ़्से अम्माराकी ख़्वाहिशात रुख़सत, अय क़ल्बे नाकारा की हसरतो रुख़सत, यह तुम्हारी ही सोहबत का फल है कि ज़बाने तेग़ मेरे खून पर लपलपा रही है, यह तुम्हारी ही हम नशीनी का असर है कि मौत की घटा नदामतों के बादल साथ लिये हुए सर पर छा रही है ।

ग़ैरतने किया सर बगरीबां ऐसा
आलम में न हो कोई पशेमां ऐसा

तड़पेगा अभी ख़ाक पे लाशा मेरा
निकलेगा लहू भी बे तहाशा मेरा
कुछ ग़ौर से देखें इसे अरबावे नज़र
इबरत का मुक़ाम है तमाशा मेरा

धवल सेठ का सीना ख़ुद बख़ुद फट जाता है।

ड्राप

अंक ४ दृश्य १

बाग़ कोठी

चन्द सहेलियों का आपस में बात चीत करना और चपला का बाग़में रोशनी करते हुए नज़र आना।

केतकी कहो बहन चपला आज रोशनी की क्यों इतनी तैयारी है।

चपला बहन तुम्हें मालूम नहीं आज तो जलसा बहुत भारी है कंवर श्रीपाल कुन्दनपुरके महाराज मकरकेतु की राजकुमारी चित्ररेखा, कंचनपुर की राजमुमारी विलासमती कुमकुम पट्टन के राजा

यज्ञसेन की पुत्री श्रृङ्गारगौरी और अनेक राजाओं को जीतकर उनकी कन्याओं को ब्याह कर लाये हैं सो आज हमारी राजकुमारी गुनमाला की तरफ़ से एक आलीशान जल्सा किया जायगा जिसकी वजह से हर एक गुलो बुलबुल एक दूसरे को मुबारकबाद देने आयगा ।

गाना

बहार आई है हर सू रंग रलियों का ज़माना है
ज़बां पर बुलबुलों की शादिये गुल का तराना है
चमक देते हैं क्या पानी के क़तरे सुबह रोशनमें
लगी हैं मोतियों की झालरें सहरा के दामन में

—※—

रंगीली—हयँ यह बाग़ में कौन है यह पैरों की आहट किसकी आती है ?

चपला—अजी वह देखो राजकुमारी गुनमाला की सवारी आती है ।

श्रीपाल का मए तमाम रानियों के आना और गुनमाला का गाना ।

गाना

प्यारे क्यों यह हालत ज़ार है काहे जीको इतना मलाल है
पिया साफ़ हमको बताओ ना हुआ ऐसा किस लिये हाल है
कहो क्या यह सोचविचार है नहीं दिलको सब्रो क़रार है
नहीं नींद आई जो रात भर कहो क्या यह ख़्वाबो ख़याल है

गाना

श्रीपाल—

दिल ही पहलू में नहीं फिर नींद कैसे आयगी
हाल मत पूछो तबीअत आपकी घबरायगी
जान और दिल से सती मैंना का मैं ममनून हूं
गर वचन झूटा हुआ एकदम क़यामत आयगी
था बरस बारह का रुखसत पर परन मैं ने किया
फ़र्क़ गर इसमें हुआ वो बदगुमां हो जायगी
अष्टमी के दिन न पहुचूंगा जो उसके पास मैं
छोड़कर घरबार वो सब अरजका हो जायगी

—※—

श्रीपाल—बस प्यारी, अब मैं यहां एक पल भी नहीं ठहर सकता हूं क्या तुम भी मेरे साथ चलना

चाहती हो ? जल्द बताओ

गुनमाला — प्राणनाथ ! मैं आपसे एक पल भी जुदा नहीं रह सकती, अब आप खुशी से सब को रवानगी का हुक्म सुनाइए।

अंक ४ दृश्य २

जंगल

मैनासुन्दी का श्रीपाल के फ़िराक़ में एक सहेली के साथ गाते हूए आना

गाना

मैनासुन्दरी —
हाय बलम आये ना मोसे सहा दुख जाये ना
न वो आये जराये सताये जिया । हाय०
मुझको मालूम न था धोका भी दे जाते हैं
क्षत्रियों के भी बचन झूट निकल जाते हैं
न तो कुछ धर्म किया और न कुछ सुख देखा
उम्र के दिन युंही बरबाद हुए जाते हैं
अन भाये ना, रहो जाये ना, हम से सहा
दुख जाये ना । न वो आये०

कुन्दप्रभा—

हे पुत्री धीरज धरो मन मत करो उदास
निश्चय करले आयगा कोठीभट रख आस
क्या जाने परदेस में क्या कारन भयो आय
जो अब लग आयो नहीं श्रीपाल वो राय

गाना

मैनासुन्दरी—

मैं ना मानूं जी तिहारी, जग दुख कारना जी
अब लग आस बिशेतरबोये, बारह बरस अकारत खोये
अब न खोऊं एक पल जन्म सुधारना जी;
अब मैं सारे दुख परहारूं, तोड़ मुकुट धरती पर डारूं
भेस अरजका सारूं सब दुख कारना जी;
जीवको मेरे मत भ्रमाओ, मतना सोते कर्म जगाओ
बेगी हुक्म सुनाओ कर इंकारना जी। मैंना मानूं०

———:※:———

कुन्दप्रभा——

तू दो दिन ठैरजा श्रीपाल गर फिर भी न आयेगा
तो दीक्षा मैं भी ले लूंगी तेरा मतलब बरआयेगा

मैनासुन्दरी—

है जीना बूंद शबनम की भरोसा है नहीं पलका
ये जाना किसने है माता कि कल क्या पेश आयेगा
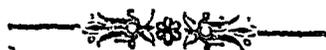
अंक ४ दृश्य ३

महल

मैनासुन्दरी का अरजका होने के लिये तैयार होना
और श्रीपाल का आ जाना

गाना

मैनासुन्दरी——

हाय प्यारे पिया मोहे दरस दिखाओ तुम बिन
जिया घबरावत है ;
लगाओ देर न प्यारे तुम आओ जल्दी से
सती को आनके सूरत दिखाओ जल्दी से
ज़रा तुम आके तो इस दिलकी बे कली देखो
हैं प्राण जाते सती के बचाओ जल्दी से
हाय जीना भयो अब पल पल भारी चैन न दमभर
आवत है ;
किये हैं बारह बरस पूरे मैंने दुख सहकर
ज़रा बताओ गये मुझसे तुम थे क्या कहकर
न आये आजका वादा किया था क्यों तुमने
इसी भरोसे वचन तुम गये थे क्या कहकर
हाय उमँड उमँड पिया नैन हमारे नीरका मेह
बरसावत है ;

न मैंने तप ही किया और कुछ न सुख देखा
संभाली उम्र है जबसे हमेशा दुख देखा
नहीं है क़ौल का कुछ एतबार दुनिया में
वचन को आपके भी हमने अब परख देखा
हाय जन्म की दुखिया दर्श अभिलाषी अरजका
बन अंब जावत है।

हाय प्राणप्यारे जीवनाधार तुम कहां हो, आओ आओ
जल्द आओ इस मन्दभागिनी को ज़ियादा न तड़पाओ
जीव मेरा दुख से भरा और देह भी सारा पटक रहो है
पापी सांस भी जाता जाता कंठमें मेरे अटक रहो है
दीक्षा लूं मैं हाय क्योंकर दिल तुम्हीं में अटक रहो है
दरस हुए ना पीतम तुम्हरे दिल में यही खटक रहो है
अपनी नेह लगालो स्वामी अब दम मेरा भटक रहो है.

श्रीपाल का आ जाना और मैनासुन्दरी को
अरजका होने से रोक लेना।

श्रीपाल—हयं हयं प्रिये यह क्या करती हो !

मैन०— कौन प्राणनाथ

ताक़त है बड़ी देखिये क्या इन्तज़ार को
प्रभुने जिया सुन लिया तेरी पुकार को

श्रीपाल— अय जान आफ़रीं है तेरे इन्तज़ार को
शाबाश तेरे सब्रो शकेबो क़रार को

मगर हां प्रिये यह तो बताओ कि तुम इस वक्त यह क्या कर रहीं थीं ?

मैनासुन्दरी— कुछ नहीं ।

श्रीपाल— आख़िर

मैन०— दीक्षा की तय्यारी ।

श्रीपाल— मैं हाज़िर हूं मेरी जां देखलो वादे से यहां पहले
अभी दिन भी नहीं निकला है जाती हो कहां पहले
मुझे अफ़सोस है तूने न इतनी इन्तज़ारी की
नज़र आ जाता पूरब से तो सूरज का निशां पहले

मैना०—
फँसे दुनिया में जो मूरख़ सदा नाशाद होता है
इसे जो छोड़ देता है वही दिलशाद होता है

मैनासुन्दरीका रूठ जाना
और श्रीपालका मनाना

श्रीपाल खैर प्रिये जो होना था सो हुआ अब इन बातों को छोड़ो ।

दोहा

ठैरा हूं मैं जिस जगह चलो वहां इकबार
ताज मुकट पट नारका सर पर धरो संवार

मैना

है जगत दुख रूप स्वामी राज क्या करना मुझे
जब यहां रहना नहीं फिर ताज क्या करना मुझे

गाना दोनोंका

मैना

हाय सइयां गरवा न डारो, वइयां सताओ नाहीं मैको
तुम जाकरके सुध मोरी बिसरइयां, ए सइयां,

श्रीपाल मोरी प्यारी इतना न अब कलपाओ
लगजाओ लगजाओ छतियां प्यारी

मैना क्या दिल में बात विचारी

श्रीपाल अय जानां कर अहसां मुझपर हां हर२ आन

मैना हायरे सइयां गरवा ना डारो बइयां सताओ नाही मैको। बिरहा की मारी मैं तो रार करूंगी तुमसे काहे सताओ मोहे मोहे कछुना सुहाय पिया तुम पर जिया जाय ज़ी जलाय कलपाय तरसाय तड़पाय हां रे सइयां०

दोनोंका गाते हुए चले जाना।

अंक ४ दृश्य ४

बाग़

बाग़ के खेमों में मैनासुन्दरी का पटरानी
का ताज पहने हुए दिखाई देना

सहेलियां—प्यारी अंग देशका हो राज मुबारक तुमको
और पटरानी का यह ताज मुबारक तुमको
सोलह सिंहार के, दिन आये प्यारे के, लटक चलो गुइयां पकड़कर बइयां, जोबन निखार के;
झूलोरी सखी झूला यौवन रस फूला, मधवा रस तूला, सइयां पुकार के।

दूत—महारज की जय हो

श्रीपाल—क्यों अय दूत तुझे हमने राजा पहुपाल के पास भेजा था क्या समाचार लाया ?

दूत—श्री महाराज राजा पहुपाल ने आपको बारम्बार प्रणाम कहा है और आपकी आज्ञानुसार यहां आने का वचन दिया है

कुछ नहीं पहुपाल राजा मान दिल में करता है
शीघ्र ही चरणों में आकर आपके सर धरता है

श्रीपाल— लो प्यारी तुम्हारी आज्ञा के पूर्वक तुम्हारे पिता आते हैं

पा बरहना होके ले कम्बल कुल्हाड़ी हाथ में
क्या किया जाये सुल्क अब बोलो उनके साथ में

मैना॰ उनके झूटे मान को सरसे गिराना चाहिये
और उन्हें जिन धर्म का निश्चय कराना चाहिये
याद है भूली नहीं मैं जुल्म अपने बापका
कुछ नतीजा जुल्म का उनको दिखाना चाहिये
कहते हैं वो यत्न है जो कुछ करम क्या चीज़ है
अब उन्हें कर्मों का कुछ जलवा दिखाना चाहिये

श्रीपाल—अब यही लाज़िम है प्रिये शान्ति मनमें धरो
जो भी हो शिकवा शिकायत दूर सब दिलसे करो

मैना॰— महाराज जैसी आपकी आज्ञा होगी वैसा ही किया जायगा।

श्रीपाल— अच्छा अय दूत जल्द जाओ और राजा पहुपाल से हमारी तरफ़ से कहो कि बड़ी शानो शौकत से यहां आयें, कुछ ख़ियाल दिलमें न लायें।

दूत— जो आज्ञा।

श्रीपाल— चलो प्रिये देखो राजा पहुपाल आपके पिता हमारे धर्म पिता तशरीफ़ लाते हैं हमको भी उनसे विनय पूर्वक मिलना उचित है।

मैना०— जो आज्ञा।

दूत— श्रीमहाराज राजा पहुपाल तशरीफ़ लाते हैं

श्रीपाल— अच्छा आने दो।

मैना०— आंख उठाकर देखिये ये कौन हैं मैं कौन हूं
सोचकर फ़रमाइये ये कौन हैं मैं कौन हूं
कौन ये महाराज हैं और किसका ये दरबार है
होश करके देखिये ये कौन हैं मैं कौन हूं
किसका तुमने हुक्म माना आये हो किसकी
शरन यह भी देखा या नहीं ये कौन हैं मैं कौन हूं

राजा पहुपाल देखत तेज स्वरूप को बुद्धी दुर्बल होय
हे स्वामी मैं सत कहूं मैं पहचाना नहिं तोय

मैना गाना

वही मैंना हूं मैं सितमज़दा तुम्हें याद हो कि न यादहो
जिसे घरसे तुमने जुदा किया;
तुम्हें याद हो कि न याद हो।

नहीं माना कर्म को आपने,
नहीं जाना धर्म को आपने।
किया मान यत्न का आपने,
तुम्हें याद हो कि न याद हो।
मुझे सोंप जिनको गये थे तुम,
ये वही हैं देखो पुर अलम।
जाके कुष्ट जारी था दम बदम,
तुम्हें याद हो कि न याद हो।
कहो अब भी आया तुम्हें यक़ीं,
कभी कर्म टारे टरे नहीं।
मैंने तुमसे बारहा कहा यही,
तुम्हें याद हो कि न याद हो।
अब जैन धर्म की लो शरन;
क़भी बोलो मुख से न दुर्वचन।
जो सुनाये थे मुझे बद वचन.
तुम्हें याद हो कि न याद हो।
पहुपाल-सर पे आ नूरे नज़र अपने बिठाऊं तुझको,
आ गले लख़्ते जिगर अपने लगाऊं तुझको,

आप शर्मिन्दा हूं मैं कहना न तेरा माना;
मुझको अफ़सोस है पहले न तेरा गुन जाना,
मुझे तदबीर का दावा था वह बातिल निकला,
सच है बस कर्मका निश्चय तेरा कामिल निकला,
लाज कुल की है मेरे आंख की पुतली तू है;
है ध्वजा धर्म की और शील की पुतली तू है,
तूने जिन धर्म का रस्ता है दिखाया मुझको,
तूने ही कर्म का निश्चय है कराया मुझको,
दिल मेरा साफ़ है तुम दोनों भी दिल साफ़ करो,
हूं शरन आया मैं अब मेरी ख़ता माफ़ करो,

श्रीपाल पिता जी आप ऐसे वचन न फरमाइये,
मैं खुद ही शर्मिन्दा हूं ज़ियादा न शर्माइये

पहुपाल हे पुत्र शरमाना कैसा तुम तो मेरे धर्म के पुत्र हो अब मेरी आज्ञा यह है कि तुम महल में पधारो क्योंकि मैनासुन्दरी की माता और वहन मैनासुन्दरी के देखने के लिये वहुत व्याकुल हैं

श्रीपाल वहुत अच्छा पिता जी जो आज्ञा (मंत्री से) अच्छा मंत्री जी आप सेना पति को हुक्म दें कि

हम कल यहां से चलेंगे और अपनी जन्म भूमि चम्पानगर की परिक्रमा करके अपना जन्म सुफल करेंगे।

मंत्री जो आज्ञा

सबका जाना

अंक ४ दृश्य ५

दरबार

श्रीपाल के चचा वीरदमनका अपने
दरबार में मए दरबारियोंके बैठे
दिखाई देना और श्रीपालके दूतका
आना

दरबान महाराजाधिराज एक दूत कंवर श्रीपाल के पास से आया है और एक नामा अपने साथ लाया है

वीरदमन अच्छा आने दो

दूतका आना

दूत—

रहे फल नख्लमें और नख्ल जब तक गुलफ़िशानीमें
असर नग़मे में और नग़मा हो मुर्ग़े बोस्तानी में
हो पानी ज़ब तलक दर्या में और दर्या रवानी में
तराना गुलकी उलफ़तका हो बुलबुल की ज़बानी में

श्री अर्हन्त तुमको रहमके औसाफ़ दिल में दें
ज़फ़ाओ जुल्म के बदले प्रभु इन्साफ़ दिल में दें
हे राजन्! मुझको आपके भतीजे श्री महाराज कोठीभट श्रीपाल ने आपकी ख़िदमत सरापा बरकत में भेजा है और यह पत्र आपके नाम दिया है।

वीर दमन—अच्छा अय दूत यह तो बता कि अब श्रीपाल का क्या हाल है?

दूत—श्री अर्हन्त देव की कृपासे और आप की महरबानी से उनको जो रोग था दूर हुआ, तमाम बदन जलवए पुरनूर हुआ, और अनेक राजाओं को जीतकर, उनकी कन्याओं को व्याहकर, चतुरंग सेना अपने साथ लेकर अपने देशको आये हैं

सिक्का उनका बैठा है हर दश्त हर अम्बोह में
ज़लज़ला है नाम से उनके ज़मीनो कोह में
पाऊं थर्राते हैं उनके रूबरू आते हुए
भागते हैं मर्दे मैदां ठोकरें खाते हुए

वीर दमन—बस अय दूत अब अपनी ज़बान बन्द कर, मैं ऐसी झूटी लनतरानी सुन्ना ही नहीं चाहता

उसको वह रोग है अगर कोई लाख यत्न करे तो भी जा नहीं सकता, अगर धन्वन्तरि सा वैद्य भी उलटा लटक जाय तो कुछ बना नहीं सकता। हां मंत्री जी सुनाओ उसने इस नामे में क्या लिखा है।

मंत्री— महापूज्यपिता समान चचा जान ! आपको याद होगा कि जिस वक्त मैं आपके पास से बीमारी की हालत में परदेस गया था तो अपना राजपाट आपको ब तौर अमानत दे गया था, अब भगवान् की कृपा और आपकी महरवानी से तन्दुरुस्त होकर वापस आयाहूं और राजमें दाख़िल होने से पहले आपसे मिलना चाहता हूं, और अपनी अमानत की वसूली चाहता हूं।

तुमहो पिता समान मैं हूं पुत्र तुम्हारा
लाज़िम है हमें दे दो राज हमारा

वीरदमन— इस नामे की तहरीर से साफ़ ज़ाहिर होता है कि वह अभी नादान है, राजनीति के काम से अनजान है, और सब से बड़ी बात

तो यह है कि रैयत को भी उससे एक वक्त में बड़ा नुक़सान पहुंच चुका है और अब भी नुक़सान पहुंचनेका अंदेशा है। इसलिये उसके लिये बहतर यही है कि इस ख़ियालेख़ाम को दिल से भुलाये और जिधर से आया है उधर ही वापस चला जाय।

दूत— हे राजन् बड़े आश्चर्य की बात है कि जो राज हमारे महाराज श्रीपालने आपको अमानत न दिया था आप उसके वापस देने में व्यर्थ क्रोध करते हैं। देखिये और सोचिये अमानत में ख़यानत करना क्षत्रियों का धर्म नहीं है। ऐसा करने में कौन आपका हामी होगा, बल्कि यह मुआमिला बाइसे बदनामी होगा और जिसे आप बच्चा ख़ियाल करते हैं

नहीं है वह बच्चा है वलवान वो
लाया है वो हांककर मौत को
है तीर उसका बिजली कमां क्या कहूं
उपमा नहीं उसकी मैं कर सकूं

गरजता, लरजता, गिराता हुआ
करे वर्षा तीरों की जाता हुआ,

वीर दमन—
ओ बे अदब बस अब कोई हर्फ़ सुनना ही नहीं
मैं बला हूं मुझे तूने जाना ही नहीं
बनके क़िस्मतका तेरी चक्र तुझको मिटा डालूंगा
याद रखना कि यहीं ख़ाक बना डालूंगा

मंत्री—राजन् क्षमा करो दूतको मारना क्षत्रियों का धर्म नहीं है।

वीर दमन—हां इसी वजह से तो मैं भी मजबूर हूं। जा दूर हो मेरे सामने से नाहिंजार और कह अपने राजा से कि नामे का यह जवाब है कि जिसकी शमशीर जौहरदार हो वही मरकबे रियासत का शहसवार हो।

दूत—बहुत अच्छा राजन् मगर यह बात याद रहे गुरूर इन्सान को हमेशा नीचा दिखाता है मसल मशहूर है कि आसमान का थूका मुहं पर आता है।

दूत का जाना।

वीर दमन—देखो सेनापति साहेब तुम जाओ और मेरी जानिब से फ़ौज को रवानगी का हुक्म सुनाओ

और मैं भी ठीक वक्त पर तुमसे आ मिलूंगा और बहादुर दफ़ेदार तुम भी जाओ और क़िले के मग़रबी दर्वाज़े पर मोरचा लगाओ ताकि क़िले की हिफाज़त काफ़ी तौर पर रहे।

सब का जाना।

अंक ४ दृश्य ६

जंगल

वीर दमन—शिकस्त फाश शिकस्त! बदनामी नाकामी शिकवए नाकाम रहगया
बन चला था जो काम वही नाकाम रहगया
मेरे सिपाही कैसे बुज़दिले, काश श्रीपाल से आधी भी हिम्मत मेरे सिपाहियों में होती।

श्रीपाल का एक सिपाही के पीछे तीर कमान लिये आना और उस को मारना।

वीरदमन कौन मेरा शिकार श्रीपाल बदशआर, ओ मेरी उम्मीदों को ख़ाक में मिलाने वाले हैं कहां अब बता तेरी जान के बचाने वाले

श्रीपाल अय मेरे बुजुर्ग चचा मुझ पर इतना क्यों इताब है मैं आपको अपना राज्य वतौर अमानत दे गया था न कि इस वास्ते कि आप अमानत में ख़यानत करें और ख़ानदान को तबाहीमें लाएं बहतर यही है कि अब मेरा राज मुझको वापस दे दें क्योंकि आप मेरे पिता के समान हैं मैं आपका अपमान करना नहीं चाहता

वीरदमन ओ नादान जब बहादुर लोग मैदान में आते हैं तो चचा भतीजा तो क्या सगे बाप बेटे आपस में कट कर मरजाते हैं। अब क्यों डरता है मैंने तुझसे पहले ही कहला भेजा था कि मेरे रास्ते से दूर हो

मैं हूं एक शेर जो बिफ़रा तो चबा डालूंगा
मैं हूं एक आग जो भड़का तो जला डालूंगा
बनके तक़दीरका चक्कर तेरी तुझको मिटा डालूंगा
याद रखना कि यहीं ख़ाक बना डालूंगा
है वीरदमन नाम तो जीता न छोडूंगा
मरने से पहले मैं कभी मुंह को न मोड़ूंगा

श्रीपाल हां, अगर यह वात है तो
आ इधर मैदान में अव ज़रा संभाल
अपने कियेका आज तू पायेगा मुझसे फल
करदूंगा एक बार मैं तुझको मैं खंड भंड
आ ले संभाल वारको तोड़ूं तेरा घमंड

वीरदमन और श्रीपाल का वहुत देरतक युद्ध होना, दोनोंके हाथसे हथियारोंका गिरना फिर दोनों का कुश्ती लड़ना और श्रीपाल का वीरदमन को ज़मीन पर गिराकर उसकी छातीपर चढ़ बैठना देवताओं का आना फूल वरसाना और श्रीपाल के गलेमें फूलमाला डालना और स्तुति करना और वीरदमन को छोड़ना अरदास करना

देवता बस बस राजा श्रीपाल बस इसने तेरी महिमा नहीं जानी तू सेव गामी चर्म शरीरी है राजा बलवान यह लड़ने जो तुझसे आया है बिलकुल नादान, इसकी बातों पर न जा तू कर अपने पर ध्यान, तू लासानी यह अभिमानी दे इसको अभय दान ।

श्रीपालका वीरदमन को छोड़ना ।
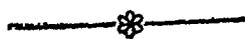
वीरदमन— गाना

ये नीयत थी नहीं मेरी न दूं मै राज जां तेरा;
मै ताक़त आजमाई में था करता इमतिहां तेरा,
सो है बेशक बहादुर तू बड़ा योद्धा है बलधारी.
यक़ीं ये अब हुआ मुझको कि था झूठा गुमां मेरा
पिन्हाकर ताज तुझको और दीक्षा आप लेकरके,
चला जायेगा बनको अब चचा यह बे गुमां तेरा
हुईजो कुछ भी हो गलती क्षमा इस दम करा लेना
मुआफ़ी मांगने का है यही हाज़िर समां तेरा;

अंक ४ दृश्य ७

चम्पापुर

श्रीपाल का मए वीरदमन व मैनासुन्दरी व तमाम रानियों का दरबार में पहुंचना और वीरदमना का श्रीपाल को ताज पहनाना और खुद दीक्षा धारण करने के लिये वन को जाना

वीर दमन—यह वक्त निहायत खुशी का है जो श्री जिनेद्र देव की कृपा से महाराज श्रीपाल बरसों के बाद चम्पापुर में आये, सती मैनासुन्री को साथ ला अपने पिता का यह राज्य पाया, चम्पापुर के राज्य की शानो शौकत को बढ़ाया। आज यह मुबारक ताज अय श्रीपाल मैं तुझको खुशी से पहनाता हूं और मैं जैन दिक्षा लेने के लिये बन को जाता हूं।

वीर दमन का जाना सब का मुबारकबादी गाना।

सहेलियां—

प्यारी बादे बहारी चली चम्पा मंझारी हुई आनन्द सारी नगरियां आन,
तेरे सरपर बिराजे ताज हीरोंका साजे,
सारे राजों में राजा तूही बलवान, दूनी दूनी हो शान,
होवे दुश्मन हैरान अजी तावे हों सारे ज़मीन आसमान, हो मुबारक यह ताज तुझे चम्पा का राज बोलो सारी समाज होवे जय जय जय होवे जय जय जय, जय जय जय । प्यरी०

श्रीपाल नाटक समाप्तम्

बेताब प्रिंटिंग वर्क्स चाह रहट देहली ।

ड्राप